Solved Paper, 2022

HINDI (CORE)
Term-II (Delhi Set-1)

Series : ABCD5/5

प्रश्न पत्र कोड
2/5/1

निर्धारित समय : 2 घण्टे | **अधिकतम अंक : 40**

सामान्य निर्देश:

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए—

(i) इस प्रश्न-पत्र में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।

(ii) इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड हैं—खण्ड 'क' और खण्ड 'ख'।

(iii) इस प्रश्न-पत्र में कुल 7 प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

(iv) प्रश्नों में आंतरिक विकल्प भी दिए गए हैं। निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड 'क'
(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

1. निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 से 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए— $1 \times 5 = 5$

(क) आत्मसंयम

(ख) पानी का सदुपयोग

(ग) विज्ञापनों का संसार

2. (क) आपका नाम प्रशान्त/प्रतीक्षा है। आप अपने विद्यालय में 'तुलसी-जयंती' मनाना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में अपने प्राचार्य को पत्र लिखकर कार्यक्रम के सम्बन्ध में अनुमति माँगिए और उनसे कार्यक्रम की अध्यक्षता करने का अनुरोध कीजिए। 5

अथवा

(ख) आप अकबर/अमीना हैं। आप इसी वर्ष 18 वर्ष के हुए हैं। आपने ऑनलाइन मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने तथा मतदाता पहचान-पत्र बनवाने के लिए आवेदन किया है। लेकिन आपके पास इस सम्बन्ध में कोई सूचना नहीं आई है। इस सन्दर्भ में निर्वाचन आयुक्त को शिकायती पत्र लिखिए।

3. (क) (i) कहानी के संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय किन तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों? 3

अथवा

(ii) कहानी में वर्णित पात्रों का चरित्र-चित्रण, नाटक में किस प्रकार दिखाया जाता है?

(ख) (i) मंच पर अभिनीत किए जाने वाले नाटकों से रेडियो नाट्य लेखन में क्या अन्तर है और क्यों? 2

अथवा

(ii) कथानक से आप क्या समझते हैं। कहानी या नाटक में इसे केन्द्रीय बिन्दु क्यों माना जाता है?

4. (क) (i) समाचार-पत्र में 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ का क्या महत्त्व है और क्यों? 3

अथवा

(ii) 'विशेष लेखन' का क्या आशय है? इसकी भाषा शैली कैसी होनी चाहिए और क्यों?

(ख) (i) अच्छे फीचर की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 2

अथवा

(ii) विशेष लेखन के दायरे में आजकल किन विषयों को अधिक महत्त्व मिल रहा है? किन्हीं दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

खण्ड 'ख'

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक)

5. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2 × 3 = 6

(क) फ़िराक गोरखपुरी की गज़ल में किस प्रकार की भावनाएँ और भाषा शैली का प्रयोग हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

(ख) "उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी"

तुलसीदास द्वारा रचित उपर्युक्त पंक्तियों का भाव स्पष्ट करते हुए अपने विचार व्यक्त कीजिए।

(ग) 'उषा' कविता में प्रकृति में होने वाले परिवर्तन, मानवीय जीवन के चित्र बनकर अभिव्यक्त हुए हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 3 × 3 = 9

(क) 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर "अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी"—इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

(ख) सिख बीबी को देखकर सफ़िया हैरान क्यों रह गई थी? 'नमक' कहानी के संदर्भ में उत्तर दीजिए।

(ग) 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि किसी मनुष्य को व्यवसाय बदलने की आवश्यकता कब पड़ती है और किसी मनुष्य को जीवन-भर के लिए यदि एक ही व्यवसाय में बाँध दिया जाए तो उसके क्या परिणाम निकलेंगे?

(घ) मनुष्यों की क्षमता किन तीन बातों पर निर्भर करती है? 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' पाठ के आधार पर लिखिए।

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 5

(क) (i) मोहन जो-दड़ो की सभ्यता और संस्कृति का सामान भले अज़ायबघरों की शोभा बढ़ा रहा हो, शहर जहाँ था अब भी वहीं है, कैसे? "अतीत में दबे पांव" के आधार पर समझाइए। 3

अथवा

(ii) "हमारे सीने पर चमकता पीला सितारा सारी दास्तान खुद ही कह देता था"—ऐन फ्रैंक की "डायरी के पन्ने" पाठ के आधार पर कथन को स्पष्ट कीजिए।

(ख) (i) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि ऐन फ्रैंक के मन में प्रकृति के प्रति असीम प्रेम था। 2

अथवा

(ii) नगर नियोजन की दृष्टि से मोहन जो-दड़ो अनूठी मिसाल कैसे है? उदाहरण सहित लिखिए।

Term-II (Delhi Set-2)

Series : ABCD5/5	प्रश्न पत्र कोड 2/5/2

नोट: केवल इन प्रश्नों को छोड़कर, शेष प्रश्नों को Delhi Set-1 से अवतरित करें।

खण्ड 'क'

(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

1. निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 से 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए—

1 × 5 = 5

(क) कामकाजी महिला की एक सुबह

(ख) कम्प्यूटर का बढ़ता प्रभाव

(ग) खाली ज़ेब बाज़ार में एक दिन

खण्ड 'ख'

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक)

6. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए— $3 \times 3 = 9$

(क) 'पहलवान की ढोलक' पाठ में 'शेर के बच्चे' की उपाधि से किसे संबोधित किया गया है और क्यों?

(ख) 'आप लोगों के हिस्से में तो हमसे बहुत ज्यादा नमक आया है।' 'नमक' कहानी में सफ़िया के भाई का यह कथन किस संदर्भ में आया है? इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि रुचि और क्षमता के आधार पर श्रम विभाजन न किए जाने पर कौन से दुष्परिणाम निकलते हैं?

(घ) 'मेरी कल्पना का आदर्श समाज' पाठ के आधार पर लिखिए कि किन तीन दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते?

Term-II (Outside Delhi Set-1)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/1

खण्ड 'क'

(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

1. निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक का चयन कर लगभग 200 शब्दों का एक रचनात्मक लेख लिखिए— $1 \times 5 = 5$

(क) कितना कुछ देती है प्रकृति

(ख) जब अचानक भू-स्खलन हुआ

(ग) मोबाइल खेलों की बढ़ती लत

2. (क) आपके पैतृक गाँव में उच्च शिक्षण संस्थानों की कमी है। किसी प्रमुख हिन्दी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखकर ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थानों के अभाव का उल्लेख कीजिए और उन क्षेत्रों में उच्च शिक्षण संस्थान खोलने का सुझाव दीजिए। 5

अथवा

(ख) आप अपने घर के पास स्थित मॉल में खरीददारी करने गए। खरीददारी करने के उपरान्त आपने पाया कि आपकी स्कूटी निर्धारित स्थान पर नहीं है। थाना जाने पर आपकी शिकायत भी नहीं लिखी गई। पूरी जानकारी देते हुए क्षेत्र के पुलिस उपायुक्त/अधीक्षक को पत्र लिखिए। 5

3. (क) (i) कहानी और नाटक में क्या अन्तर है? दोनों के मूल तत्त्वों की समानता बताते हुए अन्तर स्पष्ट कीजिए। 3

अथवा

(ii) कहानी के पात्रों को नाट्य रूपान्तरण में किस प्रकार प्रभावशाली बनाया जा सकता है? उदाहरण सहित लिखिए। 3

(ख) (i) रेडियो नाटक के लिए किन तीन मुख्य बातों का विचार करना चाहिए और क्यों? 2

अथवा

(ii) रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंगमंच के लेखन से भिन्न कैसे है? 2

4. (क) (i) समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली कौन-सी है? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 3

अथवा

(ii) विशेष लेखन से क्या अभिप्राय है? इसकी भाषा शैली सम्बन्धी विशेषताओं का आधार क्या होता है और क्यों? 3

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE

(ख) (i) बीट रिपोर्टर बनने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ करनी पड़ती हैं? उदाहरण सहित समझाइए। 2

अथवा

(ii) नए एवं अप्रत्याशित विषयों पर लेखन से आप क्या समझते हैं? यह एक चुनौती कैसे है? 2

खण्ड 'ख'

(पाठ्य-पुस्तक और अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक)

5. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $2 \times 3 = 6$

(क) 'उषा' कविता के आधार पर बताइए कि कविता में भोर के नभ को राख से लीपा, गीला चौका क्यों कहा गया है? 3

(ख) 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग के आधार पर बताइए कि पंख के बिना पक्षी और सूँड के बिना हाथी की क्या दशा होती है? कविता में इनका उल्लेख क्यों किया गया है? 3

(ग) ''आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है''
'रुबाइयाँ' की उपर्युक्त पंक्तियों में बालक की कौन-सी विशेषता अभिव्यक्त हुई है? 3

6. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $3 \times 3 = 9$

(क) 'पहलवान की ढोलक' कहानी से क्या सन्देश मिलता है? अपने शब्दों में लिखिए। 3

(ख) 'सीमा के आधार पर बँटे होने पर भी भारत और पाकिस्तान की जनता के दिलों में एक ही धड़कन है, जो एक-दूसरे से मिलने के लिए आतुर है।' 'नमक' कहानी के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए। 3

(ग) डॉ. आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज की आधारभूत बातें संक्षेप में लिखिए। 3

(घ) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता क्यों पड़ती है? पेशा बदलने की स्वतन्त्रता न होने से क्या परिणाम होता है? 3

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए— $3 + 2 = 5$

(क) (i) उन तथ्यों का उल्लेख कीजिए जो लेखक की इस मान्यता की पुष्टि करते हैं कि ''सिंधु घाटी सभ्यता समृद्ध थी परन्तु उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था''। 3

अथवा

(ii) 'ऐन फ्रैंक की डायरी' पिछले 50 वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में से एक है। इस डायरी में ऐसी क्या विशेषताएँ हैं? लिखिए। 3

(ख) (i) 'मोहन जो-दड़ो' के बड़े घरों में छोटे कमरे होने का क्या कारण था? 2

अथवा

(ii) 'ऐन फ्रैंक की डायरी' उसकी निजी भावनात्मक उथल-पुथल का दस्तावेज भी है। इस कथन की विवेचना कीजिए। 2

Term-II (Outside Delhi Set-2)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/2

नोट: निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रश्न Delhi Set-1 से है।

खण्ड 'ख'

(पाठ्य-पुस्तक और अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक)

5. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $2 \times 3 = 6$

(क) 'उषा' कविता में 'भोर के नभ' की तुलना किससे की गई है और क्यों? 3

(ख) 'लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप' प्रसंग में संकलित चौपाइयों के आधार पर राम का लक्ष्मण के प्रति प्रेम-भाव का वर्णन कीजिए। 3

(ग) फ़िराक की रुबाइयों के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य-बिंब को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। 3

6. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $3 \times 3 = 9$

(क) 'पहलवान की ढोलक' कहानी प्राचीन लोक-कलाओं के धीरे-धीरे विलुप्त होने के दर्द का वर्णन करती है। कैसे? पाठ के आधार पर लिखिए। 3

(ख) 'नमक' कहानी के आधार पर बताइए कि सफ़िया और उसके भाई के विचारों में क्या अन्तर है? और क्यों? 3

(ग) डॉ. आंबेडकर ने आर्थिक असमानता से भी अधिक हानिकारक किसे और क्यों माना है? 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए। 3

(घ) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता क्यों पड़ती है? पेशा बदलने की स्वतन्त्रता न होने से क्या परिणाम होता है? 3

Term-II (Outside Delhi Set-3)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/3

नोट: निम्न प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य सभी प्रश्न Delhi Set-1 से है।

खण्ड 'ख'

(पाठ्य-पुस्तक और अनुपूरक पाठ्य-पुस्तक)

5. निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $2 \times 3 = 6$

(क) 'उषा' कविता में 'भोर के नभ' की पवित्रता, निर्मलता और उज़्ज्वलता को किन रूपों में वर्णन किया गया है? अपने शब्दों में लिखिए। 3

(ख) 'खेती न किसान को' छंद के आधार पर बताइए कि तुलसीदास ने अपने समाज के लोगों की जीविका विहीनता का चित्रण कैसे किया है? 3

(ग) फ़िराक गोरखपुरी की गज़ल के शेरों से उभरने वाले प्रकृति-सौंदर्य को अपने शब्दों में लिखिए। 3

6. निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए— $3 \times 3 = 9$

(क) 'पहलवान की ढोलक' कहानी प्राचीन लोक-कलाओं के संरक्षण का संदेश देती है। इनके पुनर्जीवन के लिए क्या प्रयास किए जा सकते हैं? 3

(ख) 'नमक' कहानी में आए चरित्रों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि आज भी दोनों देशों की जनता के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है। 3

(ग) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर लिखिए कि जाति आधारित श्रम विभाजन आर्थिक विकास के लिए किस प्रकार बाधक है? 3

(घ) 'श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता क्यों पड़ती है? पेशा बदलने की स्वतन्त्रता न होने से क्या परिणाम होता है? 3

❑❑❑

उत्तरमाला

Term-II (Delhi Set-1)

Series : ABCD5/5

प्रश्न पत्र कोड 2/5/1

खण्ड 'क'

(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

1. (क) आत्मसंयम का सहज और सरल अर्थ है अपने आप पर, अपने मन पर नियंत्रण।

संयम जीवन सारथी, जीवन रथ पुरुषार्थ
धीर वीर नित संयमित, विजयी समझो सार्थ।।

इसका शाब्दिक अर्थ जितना सरल प्रतीत होता है वास्तविक जीवन में इसको प्रयोग में लाना और इसको आत्मसात करना उतना ही कठिन है। शांत, क्षमाशील, उदार एवं स्थिर मन ही सबसे अधिक कार्य कर पाता है। इसे ही आत्म संयम कहते हैं जिसे श्रीमदभागवत गीता में बहुत ही विस्तार से बताया गया है कि अपने पर नियंत्रण नहीं किया तो योग की प्राप्ति कठिन है, मन चंचल और अस्थिर है, मन को शांत कर पाने वाले योगी को उत्तम सुख मिलता है। आत्मा को प्रलोभनों से दूर रखना ही आत्मसंयम है। इसे प्राप्त करने के लिए मन की इंद्रियों पर पकड़ और विचारधारा को जकड़ कर रखना पड़ता है। हम आत्मसंयम भी विकसित करते हैं और नैतिक रूप से विकसित होते हैं। इस प्रकार आत्म केवल व्यक्तिक कार्यों से सम्बन्धित अपना गुण नहीं रहता। यह उसके पार जाता है। वास्तव में, यह आत्म सामाजिक संसार से परस्पर आदान-प्रदान के रूप में जोड़ता है।

हमें किसी से अपेक्षा रखना खुद को उपहास, दयनीय स्थिति, तिरस्कार व घृणा का पात्र बना लेने के बराबर है। इस स्थिति में लोग आश्रित और परजीवी बन जाते हैं। आत्म-शक्ति से परिपूर्ण व्यक्तियों के मध्य हमारी खुद की स्थिति दयनीय हो जाती है। आत्म-विश्वासी व्यक्ति इसके ठीक विपरीत वीर और संकल्पी होता है। ऐसे व्यक्ति के अपने प्रयत्न के साथ-साथ ईश्वर भी संघर्ष में उसकी सहायता करता है। वह दूसरों की सहायता पर विश्वास नहीं करता, मुसीबतों से संघर्ष करता है तथा हर पग पर नए अनुभव प्राप्त करता है। ऐसे लोग कमजोर और पिछड़े वर्ग को मानसिक दृढ़ता, सहनशीलता व आत्म-निर्भरता की शिक्षा देते हैं।

(ख) जल ही जीवन है और इससे ही हमारा जीवन चलता है पर क्या इसे कोई मानता है, नहीं। आज का जो समय है उस समय में पानी की एक-एक बूँद बचाना आवश्यक है। यह भी सत्य है कि अगर आप पानी नहीं बचाएँगे तो आने वाली पीढ़ी एक-एक बूंद को तरसेगी। जितनी तेजी से धरती पर जल स्तर घट रहा है उससे तो ऐसा ही लग रहा है कि पानी 90 से 100 फुट नीचे जा चुका है। पानी को आने वाले कल के लिए बचाना चाहिए। आज की पानी की बचत आने वाले समय के लिए बहुत उपयोगी साबित होगी। कई बार ऐसा देखा जाता है कि खुले नाले और खराब मशीनरी व पाईप के कारण पानी काफी ज़्यादा बर्बाद हो जाता है। बिना किसी कारण से पानी न बहाएँ और न ही व्यर्थ जाने दें। पानी ही जीवन का आधार है और अगर पानी को बचाना है तो इसका संरक्षण ज़रूरी है। पानी की उपलब्धता भी काफी तेज़ी से घट रही है और महामारी भी बढ़ रही है। पानी को बचाना हमारी राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी है एवं यह मुद्दा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी काफी तेज़ी से फैल रहा है। पानी के स्त्रोतों में कमी आ रही है। पानी को सुरक्षित रखना व इसे बचाना हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी है। जिस प्रकार पानी के स्रोतों में कमी आ रही है उस हिसाब से पानी को बचाना एकदम असंभव-सा होता जा रहा है। पानी को बचाने में हमारी ज़िम्मेदारी को हमें समझना चाहिए।

जल की एक बूंद भी व्यर्थ ना गंवाएं वरना मरना पड़ेगा भूखा
जल का उचित उपयोग करोगे तभी देश में कभी ना होगा सूखा।।

(ग) विज्ञापन का तात्पर्य है, किसी भी सामग्री उत्पाद और सेवाओं को ग्राहकों तक पहुँचाना। हम जिस युग में जी रहे हैं, उसमें विज्ञापन का बहुत महत्त्व है। आम लोग किसी भी वस्तु को खरीदने से पूर्व, उनके विज्ञापन देखते हैं। विज्ञापन किसी भी साधारण वस्तु का इतना अच्छा प्रचार प्रसार करते हैं, कि दर्शक उससे सम्मोहित हो जाते हैं। अगले ही दिन उस वस्तु को बाज़ार से खरीद लाते हैं। विज्ञापन का हमारे दिल और दिमाग पर गहरा असर पड़ता है। दरअसल हम बाज़ार से उन वस्तुओं को अधिक खरीदते हैं, जिनके

विज्ञापन हम टीवी या रेडियो पर देखते और सुनते हैं। बाहर दीवारों, बसों के पीछे एवं सोशल मीडिया जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, इंटरनेट के विभिन्न ब्लोग्स इत्यादि पर विज्ञापन के वीडियो छाए रहते हैं। आकर्षक तरीके से, लोगों की माँग को ध्यान में रखकर विज्ञापनों को बनाया जाता है। नामचीन कंपनियाँ प्रोडक्ट का प्रचार-प्रसार करती हैं और उनके गुणों को दूर-दूर तक पहुँचाती हैं। ग्राहकों का ध्यान अनोखे और आकर्षित विज्ञापनों द्वारा खींचने के प्रयास किए जाते हैं। दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाले सारे उत्पाद हम विज्ञापनों से प्रभावित होकर ही खरीदते हैं। बड़े-बड़े अभिनेता व अभिनेत्रियाँ विज्ञापन करके करोड़ों रुपए कमाते हैं। आजकल के लोग विज्ञापनों पर जल्द भरोसा कर लेते हैं। सुबह उठकर जिस टूथपेस्ट का इस्तेमाल करते हैं, वह भी किसी ना किसी कंपनी का होता है। आज प्रतिस्पर्धा की दुनियाँ में सभी कम्पनियों को सफलता चाहिए। इसलिए आए दिन कंपनी अपने प्रोडक्ट्स के ज़ोरदार प्रचार के लिए विज्ञापन का सहारा लेती है। ग्राहक उन्हीं उत्पादों को ज़्यादा खरीदता है, जिसका ज़्यादा प्रचार-प्रसार बड़े पैमाने पर किया जाता है। विज्ञापन का इस्तेमाल उद्योग जगत के लोग, लोकप्रिय कंपनी और राजनीति से जुड़ी पार्टी अपने प्रचार-प्रसार के लिए करते हैं। इसका सिर्फ यही कारण है, इसके ज़रिये करोड़ों लोगों तक कम वक्त में पहुँचा जा सकता है।

2. (क) सेवा में,

श्री प्रधानाचार्य महोदय,

क ख ग विद्यालय

शहर।

विषय—विद्यालय में 'तुलसी जयंती' मनाने हेतु अनुरोध पत्र।

महोदय,

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आगामी श्रावण मास में 'तुलसी जयंती' आने वाली है। लेकिन हम इस दिन की महत्ता को जानते व समझते हुए भी इसे प्रतिवर्ष सामान्य रूप से मनाकर छोड़ देते हैं। इस पर मेरा सुझाव है कि हम इस दिन विद्यालय में एक बड़े समारोह का आयोजन कर सकते हैं जिससे छात्रों का भक्त शिरोमणि तुलसीदास जी की तरफ रुझान बढ़ेगा।

इस कार्यक्रम की मैं स्वयं अध्यक्षता करना चाहता हूँ, अतएव आप मेरे सुझाव पर संज्ञान अवश्य लें और विद्यालय परिसर में यह कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति अवश्य दें।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र/आपकी आज्ञाकारी छात्रा

नाम—प्रशांत/प्रतीक्षा

कक्षा—12वीं "ब"

अथवा

(ख) निर्वाचन आयुक्त

नई दिल्ली

दिनांक—×/××/20××

प्रबंधक महोदय

निर्वाचन आयुक्त

..........., दिल्ली।

विषय—मतदाता पहचान-पत्र सम्बन्धित जानकारी हेतु।

महोदय

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने ऑनलाइन-मतदाता सूची में नाम आवेदन करने की प्रक्रिया की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ। मैं इसी वर्ष 18 वर्ष का हुआ हूँ तथा मैंने आपकी वेबसाइट पर जारी विज्ञप्ति द्वारा मतदाता पहचान-पत्र के लिए आवेदन किया था। जिसकी मुझे किसी प्रकार की सूचना नहीं मिली है। इसकी जानकारी के लिए मैंने कार्यालय में पूछताछ करने का प्रयास किया तो प्रत्युत्तर में मुझे एक विभाग से दूसरे विभाग की तरफ भगाया गया। आपके विभाग के निचले स्तर के कर्मचारियों का व्यवहार भी संतोषजनक नहीं रहा है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि आप इस मामले में व्यक्तिगत रुचि लेते हुए हस्तक्षेप करें तथा संबंधित कर्मचारियों को आगामी माह में आने वाले चुनाव से पहले मतदाता पहचान-पत्र भिजवाने हेतु आदेश देने का कष्ट करें।

इसके लिए हम आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

भवदीय/भवदीया

अकबर/अमीना

3. (क) **(i)** कहानी के संवादों का नाट्य रूपान्तर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिए—

- नाटक का दृश्य कथानक को आगे बढ़ाता है तथा पात्रों व परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है।
- कहानी में छपे लंबे संवादों को पाठक पढ़ तो सकता है लेकिन मंच पर बोले गए लंबे संवाद से तारतम्य स्थापित करना मुश्किल होता है।
- नाटक में हर एक पात्र का विकास कहानी जैसे आगे बढ़ती है, वैसे होता है। इसलिये कहानी का नाट्य रूपान्तर करते समय पात्रों का वितरण करना बहुत ज़रूरी होता है।
- कहानी कागज़ी होती है। एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपान्तर की बात आती है, तो एक समूह या टीम की आवश्यकता होती है।
- नाटक में पात्रों द्वारा बोले जाने वाले संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

अथवा

(ii) कहानी का संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है तथा पात्रों के गुण-दोष को उनका 'चरित्र चित्रण' कहा जाता है। जब पात्रों का चरित्र चित्रण कहानीकार के द्वारा हो तो उसे 'प्रत्यक्ष' और जब संवादों के द्वारा होता है तो उसे 'अप्रत्यक्ष' अथवा 'परोक्ष चरित्र-चित्रण' कहा जाता है। नाटक में अपने विचारों, भावों आदि का प्रतिपादन पात्रों के माध्यम से ही होता है। अत: नाटक में पात्रों का विशेष स्थान होता है। प्रमुख पात्र अथवा नायक कला का अधिकारी होता है तथा समाज को उचित दिशा तक ले जाने वाला होता है। भारतीय परम्परा के अनुसार वह विनयी, सुन्दर, शीलवान, त्यागी, उच्च कुलीन होना चाहिए। किंतु आज नाटकों में किसान, मजदूर आदि कोई भी पात्र हो सकता है। पात्रों के संदर्भ में नाटककार को केवल उन्हीं पात्रों की सृष्टि करनी चाहिए जो घटनाओं को गतिशील बनाने में तथा नाटक के चरित्र पर प्रकाश डालने में सहायक होते हैं।

(ख) **(i)** रंगमंच नाटक दृश्य और श्रव्य होता है। रंगमंचीय नाटक में यह संभव नहीं है कि किसी भी स्थान का और किसी भी प्रकार का दृश्य प्रस्तुत किया जा सके। इस कारण इसे लिखने के समय सीमित सीमाओं का ध्यान रखना होता है इसके विपरीत रेडियो नाटक पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है। फलत: रेडियो नाटक रंगमंच और उसकी सीमाओं से मुक्त होता है। इसलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न तथा मुश्किल होता है। इसमें संवादों को ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना होता है। यहाँ न तो मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा होती है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव भंगिमा। केवल आवाज़ के माध्यम से ही नाटक को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है।

अथवा

(ii) कहानी लिखे जाने की सम्पूर्ण योजना को 'कथानक' कहा जाता है। कथानक कहानी का वह तत्व है जो एक निश्चित समय में श्रृंखलाबद्ध तरीके से घटित घटनाओं की धुरी बनकर उन्हें सहयोग देता है और कथा की समस्त घटनाएँ जिसके चारों ओर ताने-बाने की तरह बुनी जाती है और विकसित होती हैं। कथा भी साधारणत: करी-व्यापार की योजना ही होती है। परन्तु किसी भी कथा को कथानक नहीं कहा जा सकता क्योंकि कथा किसी भी कथात्मक साहित्यिक कृति का केवल ढाँचा मात्र ही होती है। जबकि कथानक में तत्प्रस्तुत प्रकरणवस्तु घटनाओं की यथावत अनुकृति न होकर कला के स्वनिर्मित विधान के अनुसार संयोजित होती है। कथानक में जीवन के गतिमान संघर्षशील रूप की जीवंत अवधारणा की जाती है।

4. (क) **(i)** 'संपादक के नाम पत्र' वे पत्र हैं, जो पाठकों द्वारा समाचार पत्रों के सम्पादकों को सम्बोधित करके लिखे जाते हैं। इस प्रकार के पत्र-लेखन के लिए समाचार-पत्रों में 'संपादक के नाम पत्र' एक विशेष कॉलम होता है इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बात को समस्त पाठकों, अधिकारियों और सरकार तक प्रेषित करता है। यह सभी समाचार-पत्रों में अलग-अलग शीर्षकों के नाम से प्रकाशित किए जाते हैं जैसे—नज़र अपनी-अपनी, जनता की आवाज़, सुझाव और शिकायतें आदि।

अथवा

(ii) विशेष लेखन यानी किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाओं, समस्याओं आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषय अनुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएँ लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।

(ख) **(i)** फ़ीचर लेखन अपनी विशेषताओं के कारण ही एक फ़ीचर समाचार, निबंध या लेख जैसी विधाओं से भिन्न अपनी पहचान बनाता है। एक अच्छे फीचर में निम्नलिखित विशेषताएँ होनी चाहिए—

सत्यता या तथ्यात्मकता—किसी भी फ़ीचर लेख के लिए सत्यता या तथ्यात्मकता का गुण अनिवार्य है। तथ्यों से रहित किसी अविश्वसनीय सूत्र को आधार बनाकर लिखे गए फ़ीचर के अंतर्गत नहीं आते हैं। कल्पना से युक्त होने के बावज़ूद भी फ़ीचर में विश्वसनीय सूत्रों को लेख का माध्यम बनाया जाता है। यदि वे तथ्य सत्य से परे हैं या उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है तो ऐसे तथ्यों पर फीचर नहीं लिखा जाना चाहिए।

गंभीरता एवं रोचकता—फ़ीचर में भावों और कल्पना के आगमन से उसमें रोचकता तो आ जाती है किन्तु ऐसा नहीं है कि वह विषय के प्रति गंभीर न हो। समाज की सामान्य जनता के सामने किसी भी सूचना को आधार बनाकर या विषय को लक्ष्य में रखकर फ़ीचर प्रस्तुत किया जाता है तो वह फ़ीचर लेखक विषय-वस्तु को केन्द्र में रखकर उसके विभिन्न पहलुओं पर विचार करता है। उसके गंभीर चिंतन के परिणामों को ही फ़ीचर द्वारा रोचक शैली में संप्रेषित किया जाता है।

अथवा

(ii) विशेष लेखन का सम्बन्ध जिन विषयों और क्षेत्रों से है, उनमें से अधिकांश क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल हैं और उनसे जुड़ी घटनाओं तथा मुद्दों को समझना आम पाठकों के लिए कठिन होता है। इसलिए इन क्षेत्रों में विशेष लेखन की ज़रूरत पड़ती है, जिससे पाठकों को समझने में मुश्किल न हो। विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं, जैसे कारोबार और व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, सामाजिक मुद्दे और कानून आदि। इनमें से आजकल कारोबार और खेल जगत के विषयों को अधिक महत्त्व मिल रहा है।

धन हर आदमी के जीवन का मूल आधार है। हमारे रोजमर्रा के जीवन में धन का खास महत्व है। हम बाज़ार से कुछ खरीदते हैं, बैंक में पैसे जमा करते हैं, बचत करते हैं, किसी कारोबार के बारे में जानते हैं या कुछ भी ऐसा सोचते या करते हैं, जिसमें आर्थिक फ़ायदे, नफ़ा-नुकसान आदि की बात होती है तो इनका कारोबार और अर्थ-जगत से सम्बन्ध जुड़ता है। यही कारण है कि कारोबार, व्यापार और अर्थ-जगत से जुड़ी खबरों में काफ़ी पाठकों की रुचि होती है।

खेल का क्षेत्र ऐसा है, जिसमें अधिकांश लोगों की रुचि होती है। खेल हर आदमी के जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है। बचपन से ही हमारी विभिन्न खेलों में रुचि होती है और हममें से अधिकांश के भीतर एक खिलाड़ी ज़रूर होता है। जीवन की भाग-दौड़ की वजह से यह खिलाड़ी बेशक कहीं दब जाता हो, लेकिन खेलों में दिलचस्पी बनी रहती है। इसलिए हम देखते हैं कि क्रिकेट हो या हॉकी, टेनिस हो या फुटबॉल, ओलंपिक हो या एशियाई खेल उसे देखने वालों की संख्या काफ़ी ज़्यादा होती है।

खण्ड 'ख'

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक)

5. (क) फ़िराक गोरखपुरी 'गज़ल' में दर्द व कसक से पूर्ण भावनाओं का वर्णन किया गया है। उसने बताया है कि लोगों ने उसे सदा ताने दिए हैं। उसकी किस्मत हमेशा उसे दगा देती रही। गोरखपुरी की रुबाइयाँ कलापक्ष की दृष्टि से बेहतरीन बन पड़ी हैं। भाषा सहज, सरल और प्रभावी है। भावानुकूल भाषा शैली का प्रयोग हुआ है। उर्दू शब्दावली के साथ-साथ शायर ने देशज संस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक ढंग से किया है। लोका, पिनहाती, पुते, लावे आदि शब्दों के प्रयोग से उनकी रुबाइयाँ अधिक प्रभावी बन पड़ी हैं।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में लक्ष्मण के मूर्छित होने के पश्चात राम की व्याकुलता का मार्मिक वर्णन किया गया है। आधी रात बीत जाने पर भी हनुमान को न आता देख राम व्यथित हो लक्ष्मण को गले लगा लेते हैं और लक्ष्मण का स्वयं के प्रति निःस्वार्थ प्रेम याद कर

रोने लगते हैं। तुलसीदास जी ने इन पंक्तियों में यह बताने का प्रयास किया है कि एक भाई के बिना दूसरे भाई का अस्तित्व कुछ नहीं रह जाता। बड़े भाई का छोटे भाई के प्रति अथाह प्रेम की झलक देखने को मिलती है।

(ग) प्रस्तुत कविता सूर्योदय के ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित प्रकृति का शब्द-चित्र है। कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का प्रयास किया है। इस कविता में कवि सूर्योदय के साथ एक जीवंत परिवेश की कल्पना करता है जो गाँव की सुबह से जुड़ता है। सिल, राख से लिपा हुआ चौका, स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हे हाथ जैसे नए बिंब, नए उपमान, नए प्रतीकों का उल्लेख किया है। कवि ने प्रातःकाल के सूर्योदय की विविध छवियों को अपनी कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

6. (क) गाँव में हैजे व मलेरिया का प्रकोप था। जिसके कारण घर-घर में मौतें हो रही थीं। चारों ओर मौत का सन्नाटा था। ऐसा लगता था मानो अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। जिस प्रकार रात के अँधेरे में सब कुछ शांत हो जाता है। उसी प्रकार उस रात की निस्तब्धता करुण सिसकियों व आहों को बलपूर्वक दबाने की कोशिश कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं भी प्रकाश का नाम नहीं था। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता था तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। क्योंकि दिन में मौत का तांडव रहता था तथा हर तरफ़ चीख-पुकार होती थी। इस कथन में लेखक ने रात का मानवीकरण किया है। वह मानव की तरह शोक प्रकट कर रही है।

(ख) सफ़िया ने सिख बीबी को देखा, तो वह हैरान रह गई। बीबी का वैसा ही चेहरा था, जैसा सफ़िया की माँ का था। बिल्कुल वही कद, वही भारी शरीर, वही छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगा रही थी। चेहरा खुली किताब जैसा था। बीबी ने वैसा ही सफ़ेद मलमल का दुपट्टा ओढ़ रखा था, जैसा सफ़िया की अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं, इसीलिए सफ़िया बीबी की तरफ बार-बार बड़े प्यार से देखने लगी, उसकी माँ तो बरसों पहले मर चुकी थीं, पर यह कौन? उसकी माँ जैसी हैं, इतनी समानता कैसे है?

(ग) डॉ. अंबेडकर का मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और समान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परन्तु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। भारत में जन्म के आधार पर किसी का पेशा तय कर देना, जीवनभर एक ही पेशे से बँधे रहना, जाति के आधार पर ऊँच-नीच का भेदभाव करना तथा बेरोजगारी तथा भुखमरी की स्थिति में भी पेशा बदलने की अनुमति न होना, ऐसी व्यवस्था है जातिप्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। ज़बरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है और वे काम को टालते या कामचोरी करते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का भी विकास नहीं होता है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति को व्यवसाय बदलने की आवश्यकता पड़ती है।

(घ) मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है—

(i) **शारीरिक वंश परंपरा—**शारीरिक वंश परम्परा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद अंबेडकर समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह इसलिए करते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

(ii) **सामाजिक उत्तराधिकार—**सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार को अनुचित मानते हैं। उनका मानना है कि समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है तो उसे समाज के सदस्यों को आरम्भ से ही समान अवसर व समान व्यवहार उपलब्ध करवाने चाहिए।

(iii) **मनुष्य के अपने प्रयत्न—**मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। शहर में कान्वेंट स्कूल व सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के बीच स्पर्धा में कान्वेंट स्कूल का विद्यार्थी ही जीतेगा क्योंकि उसे अच्छी सुविधाएँ मिली हैं। जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका भी विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

7. (क) (i) मुअनजो-दड़ो के अजायबघर में सिंधु-सभ्यता के पुरातत्व के अवशेष रखे गए हैं। यहाँ पर काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्-भांड, चौपड़ की गोटियाँ, लकड़ी की बैलगाड़ी, पत्थर के औज़ार, मिट्टी के कंगन आदि अजायबघर की शोभा बढ़ा रहे हैं। लेकिन शहर जहाँ था अब भी वहीं है। आप इसकी किसी भी

दीवार पर पीठ टिका कर सुस्ता सकते हैं। वह एक खंडहर क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं।

अथवा

(ii) डायरी की लेखिका ऐन फ्रैंक ने हिटलर के अत्याचारों व द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के परिणामों को खुद देखा व झेला भी। द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45) के समय नीदरलैंड के यहूदी परिवारों पर हिटलर के अत्याचार बढ़ गये थे। उसने गैस चैंबर व फायरिंग स्क्वायड के माध्यम से लाखों यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया। इसीलिए यहूदी परिवार गुप्त स्थानों में छिपकर अपने जीवन की रक्षा करने को बाध्य हुए। वे बड़े थैलों को कंधों पर उठाये अज्ञातवास पर अपने नये गुप्त आवास की तरफ चल पड़े। उनके सीने पर चमकता हुआ पीला सितारा लगा हुआ था जो लोगों को उनकी व्यथा के बारे में बता रहा था। दरअसल हिटलर के शासनकाल में यहूदियों को अपनी पहचान बताने के लिए सीने में पीला सितारा लगाना आवश्यक था।

(ख) (i) ऐन प्रकृति को निहारना चाहती है और यही सोचकर उन स्मृतियों में खो जाती है। जब नीला आकाश, पक्षियों की चहचहाने की आवाजें, चाँदनी रात और खिली कलियाँ उस पर जादू-सा कर देती थीं। अब ये सभी चीजें बीते जमाने की हो गई हैं। वह आगे कहती है—"आसमान, बादलों, चाँद और तारों की तरफ़ देखना मुझे शांति और आशा की भावना से सराबोर कर देता है।"

अथवा

(ii) सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े नगर मुअनजोदड़ो की नगरयोजना अपने आप में अनूठी थी। यह आधुनिक नगरों से भिन्न थी। आजकल के नगरों की योजना में फैलाव की गुंजाइश बहुत कम होती है। एक विस्तार के बाद नगर योजना असफ़ल साबित होती है। 'मुअनजोदड़ो' की नगर योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं—

1. यहाँ सड़कें चौड़ी व एक-दूसरे समकोण पर काटती थीं।
2. जल निकासी की भी व्यवस्था उत्तम थी।
3. मकानों के दरवाज़े मुख्य सड़क पर नहीं खुलते थे।
4. सड़क के दोनों ओर ढकी हुई नालियाँ थीं।
5. हर जगह एक ही प्रकार की ईंटों का प्रयोग किया जाता था।
6. हर घर में एक स्नानघर होता था।
7. कुएँ पकी हुई एक ही आकार की ईंटों के बने थे। यह पहली संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँची थी।

Term-II (Delhi Set-2)

Series : ABCD5/5	**प्रश्न पत्र कोड 2/5/2**

1. (क) भारत में प्रत्येक मध्यम वर्गीय स्त्री सुशिक्षित है। दिन-प्रतिदिन की आर्थिक समस्याओं को पूरा करने के लिए दफ़्तरों इत्यादि जगहों पर जाकर काम करती है। आजकल दुनिया में काफी परिवर्तन आया है। पुराने दिनों की तरह लड़कियाँ अब अशिक्षित नहीं रही हैं। महिलाएँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सर्वत्र जगह चल रही हैं और कामयाब भी हो रही हैं। महिलाएँ आज एक सफ़ल इंजीनियर हैं, डॉक्टर या शिक्षक या दफ़्तरों में अफ़सर, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ महिलाओं ने अपनी काबिलियत को प्रमाणित न किया हो। परन्तु घर में आज भी एक कामकाज़ी नारी की सुबह करारे तानों से ही शुरू होती है। सुबह-सुबह न जाने कितने तनाव झेलने पड़ते हैं। उसे अपने दफ़्तर की तैयारी करनी होती है। अपने पति और बच्चों के नाश्ते, भोजन तथा अन्य ज़रूरी कामों की तैयारी करनी होती है। यदि बच्चा बहुत छोटा हो तो फिर तनाव अत्याचार में बदल जाता है। महिलाओं से परिवार और कार्यस्थल बहुत उम्मीदें रखता है। महिलाएँ भी इंसान होती हैं मशीन नहीं। घर में यह आशा की जाती है कि वह कार्यस्थल से आकर फिर अपनी गृहस्थी संभालें। महिलाएँ गृहिणी के रूप में भी सारी अपेक्षाओं को पूरा करती हैं। कितनी भी थकान हो वह अपने परिवार को महसूस होने नहीं देती है, शान्ति से समझौता करते हुए अपनी भूमिका बेहतरीन रूप से निभाती हैं।

(ख) वर्तमान काल में विज्ञान ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। इस प्रगति में कम्प्यूटर का आविष्कार आधुनिक युग की सर्वाधिक चमत्कारी घटना है। कम्प्यूटर आधुनिक तकनीक की एक महान खोज है। यह इस्तेमाल करने में बेहद आसान है इसलिये कम उम्र

के बच्चे भी इसे काफी आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं। यह बहुत ही भरोसेमंद है जिसे हम अपने साथ रख सकते हैं और कहीं भी और कभी भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे हम अपने पुराने डेटा में बदलाव के साथ नया डेटा भी बना सकते हैं। वर्तमान काल में कम्प्यूटर का उपयोग मुद्रण, वैज्ञानिक अनुसन्धान, अन्तरिक्ष विज्ञान एवं कृत्रिम उपग्रहों के प्रक्षेपण के साथ ही अनेक कार्यों में किया जा रहा है। इसमें कई सूचनाएँ एक साथ एकत्र रखी जा सकती हैं तथा असाध्य सांख्यिकीय प्रश्नों को पूर्णतया शुद्ध हल किया जा सकता है। शुद्ध गणना के लिए यह अचूक साधन है। आज बैंकों में, रेलवे कार्यालयों में, औद्योगिक इकाइयों के संचालन में, आर्थिक प्रबन्धन एवं सैन्य-गतिविधियों और खगोलीय गणना में कम्प्यूटर का प्रयोग प्राथमिकता के साथ हो रहा है। ज्योतिष गणना, मौसम की भविष्यवाणी, वायुयानों के संचालन तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कम्प्यूटर को विशेष रूप से अपनाया जा रहा है। ई-मेल, ई-कॉमर्स, इण्टरनेट, सेलफोन आदि के प्रसार के साथ मनोरंजन के लिए भी कम्प्यूटर को अनिवार्य माना जा रहा है और इसकी उपयोगिता निरन्तर बढ़ती जा रही है। आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही आज तक मनुष्य हमेशा से नवीनतम आविष्कारों को सफल बनाता आया है। मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से जिन सबसे महत्वपूर्ण चीजों का निर्माण किया है, कम्प्यूटर उन्हीं में से एक है।

(ग) मैं टहलने निकल रहा था कि शाम को कुछ मेहमानों के आने की जानकारी देते हुए माताजी ने बाज़ार से शीघ्र लाने वाले सामान की सूची थमा दी। मैं शीघ्रता के लिए आने-जाने का रिक्शा करके निकला। सुपर मार्केट से सभी आवश्यक सामान लेकर बिल काउंटर पर गया और जैसे ही बिल के पैसे निकालने ज़ेब में हाथ डाला तो मैं चकरा गया क्योंकि टहलने निकलते समय मैंने अपना पर्स कमरे में ही रख दिया था। अब मेरी स्थिति बड़ी शोचनीय थी। घर ज़ाकर वापस आने का समय नहीं था। मैंने अपने कुछ निकटतम मित्रों को फ़ोन करके सहायता करने का निवेदन किया परन्तु उन्होंने अन्य ज़रूरी कार्य बताकर आने से मना कर दिया। आस-पास में कोई ज़ाना-पहचाना ना पाकर मैं खाली हाथ दुकान से बाहर आया और रिक्शा चालक को घर की तरफ़ चलने का इशारा किया। मेरे हाव-भाव को भांपते हुए रिक्शा चालक ने मुझसे मेरी परेशानी का कारण पूछा तो मैंने पूरी घटना उसे बताई। रिक्शा वाले ने अपनी ज़ेब से चार हज़ार रुपये निकाले और मुझे शीघ्र सामान लाने को कहा। मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था कि उससे पैसे कैसे लूँ, दूसरी तरफ़ कोई दूसरा रास्ता भी नहीं सूझ रहा था। रिक्शा वाले ने घर पहुँच के पैसे लौटा देने को कहा। अब मैं खुशी-खुशी सामान लेकर घर पहुँचा।

मुझे जब भी खाली ज़ेब बाज़ार में जाने वाली घटना याद आती है तो उस रिक्शे वाले का मैं धन्यवाद करता हूँ। आज भी उसके ज़ैसे व्यक्तियों के कारण इंसानियत ज़िंदा है, जो बिना माँगे मदद कर देते हैं और दूसरी तरफ़ उन मित्रों के प्रति विचार करने पर मज़बूर हो जाता हूँ कि ऐसे समय में परिचित व्यक्तियों का साथ ना मिलने से रिश्तों पर से भरोसा उठने लगता है।

6. (क) 'शेर के बच्चे' की उपाधि 'चाँद सिंह' को मिली थी। वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ पंजाब से पहले-पहल श्याम नगर मेले में आया था। सुंदर जवान, अंग-प्रत्यंग से सुन्दरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही उसने पंजाबी और पठानी पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठों को पछाड़कर 'शेर के बच्चे' की उपाधि प्राप्त कर ली थी।

(ख) साफिया ने नमक हिन्दुस्तान ले जाने के लिए अपने भाई से कहा तब उसने इस बात का विरोध करते हुए कहा कि पाकिस्तान से सरहद पार नमक ले जाना गैर कानूनी है। फिर आप नमक का क्या करेंगी और आप लोगों के हिस्से में तो हमसे ज्यादा नमक आया है।

(ग) आधुनिक युग में यह स्थिति प्राय: आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरन्तर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है। अपनी रुचि व क्षमता के आधार पर काम न करने के कारण भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिन्दू धर्म की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोज़गारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती जा रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए।

(घ) (1) शारीरिक वंश परम्परा, (2) सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परम्परा के रूप में माता-पिता की कल्याण कामना, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन आदि सभी उपलब्धियाँ जिनके कारण सभ्य समाज, जंगली लोगों की अपेक्षा विशिष्टता प्राप्त करता है और अंत में (3) मनुष्य के अपने प्रयत्न। इन तीनों दृष्टियों से नि:संदेह मनुष्य समान नहीं है।

Term-II (Outside Delhi Set-1)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/1

खण्ड 'क'

(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

1. (क) हमारे चारों ओर हम जो भी प्राकृतिक वस्तुएँ देखते हैं वह प्रकृति ही है। प्रकृति से हमें वह सब मिलता है जो इंसान के जीवन के लिए अति आवश्यक है। प्रकृति ने हमें इतना कुछ दिया है कि हम सोच भी नहीं सकते। इस धरती पर जीवन प्रकृति के कारण ही सम्भव है। ब्रह्माण्ड में और भी कई ग्रह हैं लेकिन इस प्रकृति के बिना वहाँ जीवन सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। धरती पर हर स्थान पर प्रकृति एक जैसी नहीं है। स्थान के अनुसार प्रकृति अपना रंग-रूप बदल लेती है और उस स्थान के अनुसार हमें संसाधन उपलब्ध कराती है साथ ही हमारे मन, हमारी आँखों को सुकून प्रदान करती है। प्रकृति हमें इतना कुछ देती है तो हमारा भी कुछ फर्ज़ बनता है कि हम इसके महत्व को जानते हुए इसका सम्मान करें और इसे अपने स्वार्थ के लिए उजाड़ें नहीं। जिससे मनुष्य की संताने भी इसकी सुन्दरता का आनन्द ले सकें और इसका लाभ उठा सकें अन्यथा एक दिन वह होगा जब इस प्रकृति के सौन्दर्य को लोग कम्प्यूटर पर ही देख और महसूस कर पायेंगे। इस प्रकृति में जब तक सन्तुलन है तभी तक हमारे जीवन में भी सन्तुलन है। जहाँ इस प्रकृति का सन्तुलन खराब होगा वहीं हमारे जीवन का संतुलन भी डगमगाने लगेगा। यह धरती जो हमें इतनी सुन्दर लगती है वह इस प्रकृति के कारण है अन्यथा एक निर्जन ग्रह के अलावा कुछ नहीं।

(ख) चट्टानों, मिट्टी और वनस्पतियों का किसी ढलान पर नीचे की ओर खिसकना ही भूस्खलन है। भूस्खलन, एक चट्टान के अकेले टुकड़े से लेकर, मलबे के बहुत बड़े तूफ़ान तक के रूप में हो सकता है। भारी मूसलाधार बरसात या भूकम्प भी भूस्खलन का कारण बन सकते हैं। ऐसी ही एक घटना जब हम सभी मित्र हिमाचल प्रदेश सैर करने गए तब घटित हुई, भारतीय मौसम विभाग ने भारी वर्षा को देखते हुए पाँच दिन का हाई अलर्ट जारी कर दिया था। हम जहाँ रुके थे वहाँ से कहीं भी जाना अब मुमकिन नहीं था। मणिमहेश यात्रा पर आए सैकड़ों श्रद्धालु हड़सर के पास फँस गए, देर रात हुई मूसलाधार बारिश से भरमौर-मणिमहेश मार्ग पर परनाला के पास पुलिया बह जाने के कारण रास्ता बन्द हो गया, पहाड़ दरकने से राष्ट्रीय राजमार्ग 5 अवरुद्ध हो गया, बधाल में बादल फटने से घरों और नेशनल हाईवे को नुकसान हुआ, जिससे आने-जाने का मार्ग बन्द हो गया। उधर समाचार-पत्रों में ऐसी खबरें पढ़कर परिवार वाले परेशान होने लगे। कई दिनों तक परिवारीजनों से सम्पर्क न बन पाने के कारण उनके मन में तरह-तरह की आशंकाएँ मँडराने लगीं और हमारे चारों तरफ पानी यूँ बह रहा था मानो किसी समुद्र की सैर कर रहे हों। कुछ समय पश्चात बचाव कर्मियों द्वारा हमें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया, जहाँ से हम अपने-अपने शहरों की तरफ निकले। परिवार वालों ने सभी को सुरक्षित पाकर चैन की साँस ली।

(ग) मोबाइल के स्मार्ट होने के साथ-साथ वीडियो गेमिंग भी अपना दायरा बढ़ा रही है। कम्प्यूटर पर ऑनलाइन वीडियो गेम्स, प्ले स्टेशन और वीडियो कंसोल जैसे तमाम जरिए हैं गेम खेलने के। स्मार्ट फोन में भी कई गेम एप्स मौजूद हैं जो गेमिंग की लत का सबसे बड़ा कारण है। गेम खेलने की लत ने बच्चों को तो नुक़सान पहुँचाया ही है, जिसकी भयानक नतीजों वाली ख़बरें आए दिन सुनने को मिलती रही हैं, वहीं बड़े भी इसमें उलझकर अपने समय और सेहत दोनों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। कई बार अभिभावक छोटे बच्चों को इसलिए गेम में व्यस्त रखते हैं ताकि वे उन्हें आसानी से भोजन खिला सकें और फिर वही सहूलियत उनकी लत बन जाती है। वहीं गेमिंग की लत के शिकार ज़्यादातर युवा पढ़ाई के चलते घर से दूर रहते हैं और अकेलापन दूर करने या दोस्तों से होड़ लेने के लिए गेम का सहारा लेने लगते हैं। हाल ही में बड़ों को भी इसकी लत लगी है। वे लॉकडाउन के दौरान समय बिताने के लिए इससे जुड़े थे, लेकिन अब आदी हो चुके हैं। बच्चों को मोबाइल ना दें। अगर ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मोबाइल दे रहे हैं, तो अपने यूपीआई या बैंक की एप आदि ना रखें। पढ़ाई के लिए अलग से मोबाइल दे सकते हैं, जिसमें अतिरिक्त एप्स ना हों। बच्चों को आपके यूपीआई. बैंक एप के अनलॉक पिन और ट्रांज़ेक्शन पिन से भी अनजान रखें। बच्चों से कभी भी ऑनलाइन ट्रांज़ेक्शन नहीं कराएँ क्योंकि कुछ पल के लिए यह अभिभावकों के लिए गर्व की बात हो सकती है लेकिन आगे चलकर यह परेशानी का सबब भी बन सकती है। माता पिता ख़ुद भी मोबाइल फोन पर ज़्यादा समय ना बिताएँ।

2. (क) द्वारका

नई दिल्ली

दिनांक: 11 जून 20xx

सेवा में,

सम्पादक

दैनिक नवज्योति

नई दिल्ली

विषय—उच्च शिक्षण संस्थानों के अभावों की पूर्ति हेतु।

महोदय,

मैं द्वारका के समीप लगते गाँव कलाँखेड़ी के शिक्षण समुदायों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित कर उनकी वास्तविकता को लोगों व सरकार तक पहुँचाना चाहता हूँ। काफी समय से यहाँ उच्च शिक्षा की कोई उचित व्यवस्था नहीं है और कुछ सामान्य शिक्षण संस्थान तो हैं पर उनमें पर्याप्त एवं योग्य शिक्षक नहीं हैं। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। इसी कारण गाँव के लोग लड़कियों को उच्च शिक्षा नहीं दिला पाते। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप इस पत्र को अपने समाचार के स्तंभ लेखन में प्रकाशित कर सरकार तक संदेश पहुँचाने की कृपा करें ताकि इस समस्या का समाधान हो सके।

धन्यवाद।

भवदीय

क.ख.ग.

(ख) शिवाजी पार्क

नई दिल्ली

दिनांक: xx/xx/20xx

सेवा में

उपायुक्त महोदय

क ख ग पुलिस स्टेशन

च छ ज 000000

विषय—वाहन चोरी हो जाने पर पुलिस उपायुक्त को शिकायत पत्र।

महोदय

निवेदन यह है कि मैं शिवाजी पार्क का निवासी हूँ। मेरी स्कूटी, 2018 मॉडल की तथा उसका रजिस्ट्रेशन नम्बर जी जे 5 - 2436 है, कल चोरी हो गई है जिसकी एफ आई आर लिखवाने में थाने भी गया पर वहाँ मेरी किसी ने सुनवाई नहीं की। मेरी स्कूटी का रंग सफेद है। यह लगभग शाम चार बजे के बाद की घटना है। मेरे घर के पास के ही एक मॉल में, मैं अपने मित्र के साथ में खरीददारी करने गया था परन्तु जब मैं बाहर आया तो मेरी स्कूटी वहाँ नहीं थी।

अत: श्रीमान जी से निवेदन है कि उचित कार्यवाही करते हुए चोर का पता लगाने का कष्ट करें। पत्र लिखकर मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरी गाड़ी का पता अवश्य लग जाएगा।

भवदीय

क्ष त्र ज्ञ

3. (क) **(i)** नाटक हमेशा कहानी से जुड़ा होता है। दोनों में केन्द्र बिन्दु कथानक, एक कहानी तथा एक उद्देश्य निहित होता है। नाटक और कहानी में बहुत कुछ समानताएँ होते हुए भी कुछ अन्तर हैं जैसे—

- कहानी की संरचना छोटी तथा नाटक की बड़ी होती है।
- कहानी श्रव्य जबकि नाटक दृश्य साहित्य होता है।
- कहानी पढ़कर तथा नाटक अभिनय करके प्रस्तुत किया जाता है।
- कहानी किसी भी शैली में प्रस्तुत की जा सकती है जबकि नाटक संवाद शैली में ही होता है।

अथवा

(ii) कहानी के पात्रों का नाट्य रूपान्तरण करते समय आवश्यक है कि प्रत्येक पात्र के दृश्यों का कहानी से जुड़ाव हो, एवं अनावश्यक हिस्से को निकाल दिया जाए जिससे नाटक उबाऊ और लम्बा ना हो। नाटक को रोचक बनाने के लिए निर्देशक को पात्रों की भाव भंगिमाएँ तथा मनोभावों को प्रसंगों के अनुसार नाटक में प्रस्तुति देनी होती है। उदाहरण के लिए ईदगाह का वह हिस्सा जहाँ हामिद इस द्वन्द्व में है कि क्या-क्या खरीदे, अम्मा का हाथ जल जाना आदि का रूपान्तरण संवेदनात्मक तरीके से करके उसे प्रभावशाली बनाया गया।

(ख) **(i)** रेडियो नाटक में कहानी संवादों पर आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

- कहानी एक घटना पर ही आधारित न हो, रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए जिससे श्रोताओं को कहानी सुनना ऊबाऊ न लगे।
- रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक की ही होनी चाहिए क्योंकि सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि इतनी ही होती है।
- रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या 5-6 ही होनी चाहिए क्योंकि श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। अधिक पात्रों के होने से नाटक समझने में श्रोता को कठिनाई होगी।

अथवा

(ii) रेडियो नाटक लिखते समय सुनने की क्रिया को ध्यान में रखा जाता है जबकि सिनेमा और रंग मंच के लेखन को दृश्य के आधार पर लिखा जाता है। रेडियो नाटक में अभिनेताओं की भाव-भंगिमाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती किन्तु सिनेमा और रंगमंच के लेखन में इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। रेडियो नाटक में सिनेमा व रंग मंच की भाँति ही मंच सज्ज़ा पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती।

4. (क) **(i)** समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली उलटा-पिरामिड शैली है। यह कहानी लेखन की शैली के ठीक विपरीत है जिसमें क्लाइमेक्स उलटा पिरामिड में समाचार का ढाँचा आखिरी में आता है। समाचार के आरम्भ में ही समाचार की पूरी जानकारी दे दी जाती है, फिर धीरे-धीरे घटते क्रम में उन खबरों को आगे बढ़ाते हुए उनका अन्त किया जाता है।

अथवा

(ii) अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल जगत, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों सम्बन्धित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से सम्बन्धित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इसकी भाषा-शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है। खेल, अर्थ व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग तकनीक शब्द का प्रयोग होता है। अर्थात उस क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली भाषा का प्रयोग किया जाता है।

(ख) **(i)** बीट रिपोर्टिंग अर्थात रिपोर्टर की किसी विशेष मुद्दे में रुचि होना। विशेष खबरें बीट रिपोर्टर ही देते हैं। इन रिपोटर्स को काम इनकी रुचि के अनुसार ही मिलता है। इनका एक विशेष डेस्क होता है तथा इनको अपने क्षेत्र का गहन अध्ययन करना पड़ता है। बीट रिपोर्टर को अपने स्त्रोतों से शीघ्रता से सम्पर्क करना पड़ता है और आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर उनको समय सीमा में लिखना होता है तथा सीमित समय के लिए कवर स्टोरी तैयार करने की योग्यता अर्जित करनी होती है।

अथवा

(ii) किसी नए विषय पर कम से कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर तरीके से अभिव्यक्त करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है। सामान्यतया लेखक को आत्मनिर्भर होकर विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के लिए मौलिक प्रयास करना पड़ता है। तथ्यों के अभाव और सम्बन्धित जानकारी न होने पर अतिरिक्त एवं बौद्धिक और चिन्तन शक्ति में वृद्धि के प्रयास करने पड़ते हैं।

खण्ड 'ख'

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक)

5. (क) कवि शमशेर बहादुर सिंह ने भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका इसलिए कहा है क्योंकि सुबह का आकाश हल्की धुंध होने के कारण मटमैला व नमीयुक्त होता है जो सुबह के प्राकृतिक वातावरण से मेल खाता है। इसलिए कवि ने भोर के नभ की उपमा राख से लीपे गीले चौके से की है।

(ख) पक्षी का जीवन पंखों के बिना असहाय हो जाता है। जिस प्रकार सूँड के बिना हाथी की दशा दयनीय हो जाती है उसी प्रकार राम को भी लक्ष्मण के बिना अपना जीवन उतना ही हीन लगता है जितना पंख के बिना पक्षी, मणि के बिना साँप तथा सूँड के बिना एक हाथी का जीवन शून्य समान हो जाता है।

(ग) रुबाइयाँ की उपर्युक्त पंक्तियों में बाल मनोविज्ञान का अर्थ दिखता है। बच्चों का स्वभाव होता है कि बच्चे किसी भी बात या वस्तु पर ज़िद करते हैं और जब तक उनकी ज़िद पूरी न हो तब तक वे मचलते रहते हैं तथा माता-पिता उन्हें बहलाने का प्रयास करते हैं। कविता में भी माँ बच्चे को दर्पण में चाँद का प्रतिबिम्ब दिखाकर उसे बहलाने का प्रयास करती है।

6. (क) पहलवान की ढोलक पाठ में एक तरफ तो यह सन्देश दिया गया है कि व्यवस्था बदलने के साथ ही लोक कलाओं व कलाकारों की दुर्गति हो जाती है, वहीं दूसरी तरफ इस कहानी के माध्यम से यह सन्देश देने का भी प्रयास किया गया है कि लुट्टन पहलवान जैसे किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन में इतनी तकलीफ़ों का सामना न करना पड़े एवं लोक कलाओं को संरक्षण दिया जाना चाहिए। मनुष्य को कथा नायक लट्टन की तरह विषम स्थितियों में भी सकारात्मक रहना तथा स्थिति का मुक़ाबला करते रहना चाहिए।

(ख) मानचित्र पर लकीर खींचकर देश को दो भागों में बाँट देने से जमीन और जनता बँट नहीं जाती है। इस प्रकार के कार्य जनता की भावनाओं को नहीं बाँट पाते। अपनी जन्मभूमि से अलग होकर भी उनका मन अपनी जन्मभूमि से जुड़ा रहता है। पुरानी यादें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं और मौका मिलते ही सामने आ जाती हैं। राज़नीतिक कारणों ने दोनों देशों को बाँट दिया है लेकिन लोगों में वही मुहब्बत तथा मधुर और पवित्र रिश्ते हैं। मुहब्बत ने लोगों को बाँधा हुआ है। सिख बीबी, पाकिस्तानी अधिकारी और भारतीय कस्टम के उद्गार के माध्यम से लेखिका ने इस बात को उजागर किया है।

(ग) लेखक ने एक आदर्श समाज की कल्पना की है। लेखक ने जाति प्रथा को श्रम विभाजन का एक तरीका मानने की अवधारणा को निरस्त करते हुए केवल भावनात्मक नहीं बल्कि आर्थिक उत्थान, सामाजिक व राजनैतिक संगठन और जीवनयापन के समस्त भौतिक पहलुओं के ठोस परिप्रेक्ष्य में जातिवाद के समूल उच्छेदन की अनिवार्यता ठहराई है। सभी के साथ इस आधार पर समानता का व्यवहार हो, हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए। इस तरह हम समाज का उचित निर्माण ही नहीं बल्कि समाज का विकास भी कर पाएँगे। यदि व्यक्ति के साथ समाज में समानता का व्यवहार न हो तो सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो सकती है।

(घ) भारतीय समाज में जातिवाद के आधार पर श्रम विभाजन अस्वाभाविक है क्योंकि जातिगत श्रम विभाजन श्रमिकों की रुचि अथवा कार्यकुशलता के आधार पर नहीं होता, बल्कि माता के गर्भ में ही श्रम विभाजन कर दिया जाता है, जो विवशता अरुचिपूर्ण होने के कारण गरीबी और अकर्मण्यता को बढ़ाने वाला है भारतीय समाज में जाति प्रथा श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं कहीं जा सकती है क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। समय-समय पर व्यवसाय की प्रवृत्ति में परिवर्तन होता रहता है, पैतृक व्यवसाय से गुजर-बसर करना मुश्किल हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ती है यदि ऐसा न हो तो भुखमरी और बेरोज़गारी की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

7. (क) **(i)** सिंधु सभ्यता, एक साधन-सम्पन्न सभ्यता थी परन्तु उसमें राजसत्ता या धर्मसत्ता के चिन्ह नहीं मिलते। वहाँ की नगर योजना, वास्तुकला, मुहरों ठप्पों, जल व्यवस्था, साफ-सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि की एकरूपता द्वारा उनमें अनुशासन देखा जा सकता है स्नान घर, पूजा स्थल, सामुदायिक भवन मुअन-जो-दड़ो नगर की सभ्यता को साधन सम्पन्न बनाते थे। यहाँ खेती, पशुपालन व्यापार, उद्योग धन्धे सब कुछ होता था। यहाँ न तो भव्य राजप्रासाद थे, न सन्त महात्माओं की समाधियाँ और न भव्य राजमुकुट या हथियार। इससे यह प्रमाणित होता है कि सिन्धु सभ्यता में भव्यता का आडम्बर नहीं था तथा वह समृद्ध थी।

अथवा

(ii) ऐन की डायरी पिछले पचास वर्षों में विश्व में सबसे अधिक पढ़ी गई पुस्तकों में से एक है। इसमें किसी लेखक की काल्पनिक परिकल्पना नहीं बल्कि भोगे हुए यथार्थ की वास्तविक अभिव्यक्ति है। ऐन एक साधारण लड़की द्वारा रचित सात लाख यहूदियों की आवाज है। इत्या इहरनबुर्ग ने इस डायरी के सम्बन्ध में कहा है कि 'ऐन की डायरी एक ऐतिहासिक दौर का जीवन्त दस्तावेज़ है, तो साथ ही उसके निजी सुख-दुःख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी।' इसके अलावा ऐन ने उसमें यहूदियों पर नाजी अत्याचारों का जीवंत वर्णन, उसके व्यक्तिगत जीवन के अनुभव जैसे अज्ञातवास का समय, अज्ञातवास से गिरफ्तार होने का वर्णन किया है।

(ख) **(i)** मुअन-जो-दड़ो के बड़े घरों में छोटे कमरे होने का कारण यह रहा होगा कि मुअन-जो-दड़ो मानव निर्मित टीलों पर बसाया गया था। समय के साथ-साथ आबादी बढ़ने के कारण रहने के स्थान की कमी पड़ने के कारण बड़े घरों को छोटे-छोटे कमरों में बदल दिया गया होगा।

अथवा

(ii) ऐन को अज्ञातवास के दो वर्ष डर व भय में गुजारने पड़े। यहाँ उसे समझने व सुनने वाला कोई नहीं था। यहाँ रहने वाले लोगों में वह सबसे छोटी थी। इस कारण उसे सदैव डाँट-फटकार मिलती थी यहाँ उसकी भावनाओं को समझने वाला कोई

नहीं मिलता। वह अपने सारे व्यक्तिगत अनुभव व मानसिक उथल-पुथल को डायरी के पन्ने पर लिखती। यह डायरी उसके निजी दस्तावेज की एक प्रति है।

Term-II (Outside Delhi Set-2)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/2

खण्ड 'ख'

(कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन)

5. (क) 'उषा' कविता में प्रात: कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गयी है। इस समय आकाश नम तथा धुंधला होता है। इसका रंग राख के द्वारा लिपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा चौका सूखकर साफ़ हो जाता है, उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

(ख) लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम विलाप करते हुए कहते हैं कि तुमने मेरे हित के लिए माता-पिता का त्याग कर दिया और वनवास स्वीकार किया। तुमने वन में रहते हुए सर्दी, धूप, आँधी आदि को सहन किया। यदि मुझे पहले ज्ञात होता कि वन में मैं अपने भाई से बिछड़ जाऊँगा तो मैं पिता की बात नहीं मानता और न ही तुम्हें अपने साथ लेकर वन आता। तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी हो गई है जैसे पंखों के बिना पक्षी की। ऐसी स्थिति में मैं अक्षम व असहाय हो गया हूँ। यदि भाग्य ने तुम्हारे बिना मुझे जीवित रखा तो मेरा जीवन इसी तरह शक्तिहीन रहेगा।

(ग) दीवाली के त्योहार पर पूरा घर रंग रोगन से पुता हुआ है। माँ अपने नन्हें बेटे को प्रसन्न करने के लिए चीनी मिट्टी के जगमगाते खिलौने लेकर आती है। वह बच्चों के घर में दिए जलाती है और उस दिए की रोशनी से माँ का मुख एक नई आभा से चमक उठता है। इसी तरह सावन में आए रक्षाबन्धन का ज़िक्र किया गया है। राखी के समय आकाश में काले-काले बादलों की हल्की घटा छाई हुई है। छोटी बहन ने पाँवों में पाजेब पहनी हुई हैं जो बिजली की तरह चमक रही हैं। बहन द्वारा भाई की कलाई पर बांधे गए राखी के धागे ऐसे चमक रहे हैं मानो बिजली चमक रही हो।

6. (क) प्राचीन लोक कलाएँ धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं, क्योंकि औद्योगीकरण के कारण बढ़ते शहरीकरण में इन लोक-कलाओं की प्रासंगिकता समाप्त हो रही है। आधुनिक समय में लोगों के मूल्य एवं जीवन-शैली अत्यधिक परिवर्तित हो गए हैं। अब कुश्ती जैसी कलाओं का अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। आज के नए दौर में क्रिकेट, फुटबॉल, तैराकी, हॉकी, जिमनास्टिक जैसे अन्य खेल अधिक लोकप्रिय हो गए हैं। 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लुट्टन पहलवान या कुश्ती जब तक राज्याश्रित था, तब तक फला-फूला, लेकिन राज दरबार से निकल जाने के बाद उसकी स्थिति मरणासन्न हो गई। यह उन पहलवानों और कुश्ती पसंदीदा लोगों के लिए दर्द की बात है कि उनकी रुचि का खेल अब विलुप्त-सा हो गया है।

(ख) सफ़िया भावनाओं को बहुत महत्व देती है पर उसका भाई बौद्धिक प्रवृति का था, उसकी दृष्टि में कानून भावनाओं से ऊपर था। सफ़िया मानवीय सम्बन्धों को बहुत महत्व देने वाली लड़की है, परन्तु उसका भाई अलगाववादी विचारधारा का था। सफ़िया का भाई कहता था कि आदीबो (साहित्यकार) का दिमाग घूमा हुआ होता है जबकि सफ़िया जो स्वयं अदीब थी, उसका मानना था कि अगर सभी लोगों का दिमाग अदीबों की तरह घूमा हुआ होता तो दुनिया कुछ बेहतर हो जाती। सफ़िया के भाई को गैर-कानूनी काम पसन्द नहीं थे इसी कारण वह लाहौरी नमक भारत ले जाने से रोक रहा था और सफ़िया अपने वादे के लिए नमक ले जाना चाहती थी।

(ग) डॉ. अंबेडकर ने आर्थिक असमानता से भी अधिक हानिकारक किसी व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतन्त्रता न देना माना है। इसका सीधा अर्थ है कि उसे दासता में जकड़कर रखना। इसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोज़गारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। आधुनिक युग में यह स्थिति प्राय: आती है क्योंकि उद्योग धन्धों की प्रक्रिया व तकनीक में निरन्तर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है। जिस कारण व्यापार के विकास में रुकावटें आती हैं और आर्थिक व्यवस्था खराब होने लगती है।

(घ) इस प्रश्न का उत्तर Outsie Delhi-Set-I के प्रश्न 6. (घ) में देखें।

Term-II (Outside Delhi Set-3)

Series : ABCD4/3

प्रश्न पत्र कोड 2/3/3

खण्ड 'ख'

(पाठ्यपुस्तक और अनुपूरक पाठ्यपुस्तक)

5. (क) 'उषा' कविता में प्रात:कालीन आकाश की पवित्रता के लिए कवि ने प्रात:काल का दृश्य बड़ा ही मोहक बताया है। उस समय श्यामलता, श्वेतिमा तथा लालिमा का सुन्दर मिश्रण दिखाई देता है। रात्रि की नीरवता समाप्त होने लगती है। प्रकृति में नया निखार आ जाता है। आकाश में स्वच्छता, निर्मलता तथा पवित्रता व्याप्त दिखाई देती है। सरोवरों तथा नदियों के स्वच्छ जल में पड़ने वाले प्रतिबिम्ब बड़े आकर्षक तथा मोहक दिखाई देते हैं। आकाश लीपे हुए चौके के समान पवित्र, हलकी लाल केसर से युक्त सिल के समान तथा जल में झलकनेवाली गोरी देह के समान दिखाई देता है।

(ख) तुलसीदास जी कहते हैं कि इस संसार में मजदूर, किसान वर्ग, व्यापारी, भिखारी, चारण, नौकर, चंचल नट, चोर, दूत, बाजीगर आदि पेट भरने के लिए अनेक काम करते हैं। कोई पढ़ता है, कोई अनेक तरह की कलाएँ सीखता है, कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई दिन भर गहन जंगल में शिकार की खोज में भटकता है। पेट भरने के लिए लोग छोटे-बड़े कार्य करते हैं तथा धर्म-अधर्म का विचार भी नहीं करते हैं। पेट के लिए वे अपने बेटा-बेटी को भी बेचने को विवश हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि अब ऐसी आग तो भगवान राम रूपी बादल से ही बुझ सकती है, क्योंकि पेट की आग तो समुद्र की आग से भी भयंकर है।

(ग) फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरम्भ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बन्धनों से मुक्त हो जाना, सम्बन्ध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगन्ध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिम्ब उभरता है। वह सौन्दर्य और सुगन्ध दोनों को महसूस करता है।

6. (क) प्राचीन लोककलाएँ अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं, क्योंकि औद्योगीकरण के कारण बढ़ते शहरीकरण में इन लोक कलाओं की प्रासंगिकता समाप्त हो रही है। आधुनिक समय में लोगों के मूल्य एवं जीवन शैली अत्यधिक परिवर्तित हो गए हैं। अब कुश्ती जैसी कलाओं का अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। आज के नए दौर में क्रिकेट, फुटबॉल, तैराकी, हॉकी, जिमनास्टिक जैसे अन्य खेल अधिक लोकप्रिय हो गए हैं। 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लुट्टन पहलवान या कुश्ती का खेल जब तक राज्याश्रित था, तब तक फला-फूला, लेकिन राज दरबार से निकल जाने के बाद उसकी स्थिति मरणासन्न हो गई। कुश्ती जैसी कलाओं के पुनर्जीवन के लिए सरकार के निवेश से ही शहरी एवं ग्रामीण नवयुवकों को विद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अच्छे प्रशिक्षक के अन्तर्गत उचित प्रशिक्षण एवं सम्मान आदि मिलना आवश्यक है। अत: यह कहना उचित है कि इस कहानी में लोक कलाओं को संरक्षण दिए जाने का संदेश दिया गया है।

(ख) नमक कहानी में भारत व पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मुहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है। भारत-पाक विभाजन के बाद त्रासदी में बचा प्रेम और स्नेह का स्वाद है जिसमें अपनापन है। दोनों देशों के बीच मुहब्बत का ज़ज्बा था और यह नमकीन स्वाद उनकी रगों में घुला हुआ है। लेखिका का अपने भाइयों, परिचितों से स्नेह, सिख बीवी का लाहौर से लगाव, कस्टम अधिकारियों का दिल्ली व ढाका से जुड़ाव—ये सब दोनों देशों की जनता के बीच स्नेह को दर्शाते हैं।

(ग) जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण है क्योंकि भारतीय समाज में श्रम विभाजन का आधार जाति ही है चाहे श्रमिक कार्य कुशल हो या नहीं, उस कार्य में रुचि रखता हो या नहीं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब श्रमिकों का कार्य करने में न दिल लगे न दिमाग तो कोई कार्य कुशलता पूर्वक कैसे हो सकता है। आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या लोगों का निर्धारित कार्य को मानते हैं क्योंकि अरुचि और विवश्ता वश मनुष्य काम को टालने लगता है और कम काम करने के लिए प्रेरित हो जाता है और वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि तो होती ही है एवं उद्योगों का विकास भी नहीं होता है।

(घ) इस प्रश्न का उत्तर Outsie Delhi-Set-I के प्रश्न 6. (घ) में देखें।

❑❑❑

Solved Paper, 2021

हिंदी कोर

सत्र-I, Set-4

Series : SSJ/2

प्रश्न पत्र
कोड : 002/2/4

निर्धारित समय : 90 मिनट **अधिकतम अंक : 40**

सामान्य निर्देश :

(i) *इस प्रश्न-पत्र में कुल 58 प्रश्न दिये गए हैं जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

(ii) ***सभी*** *प्रश्न समान अंक के हैं।*

(iii) *प्रश्न-पत्र में* ***तीन*** *खंड हैं—खंड-****क, ख*** *और* ***ग***।

(iv) *खंड-****क*** *में 30 प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्न संख्या 1 से 30 में से 15 प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार देने हैं।*

(v) *खंड-****ख*** *में 6 प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्न संख्या 31 से 36 में से 5 प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार देने हैं।*

(vi) *खंड-****ग*** *में 22 प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्न संख्या 37 से 58 में से 20 प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार देने हैं।*

(vii) *प्रत्येक खण्ड में निर्देशानुसार परीक्षार्थियों द्वारा पहले उत्तर किए गए वांछित प्रश्नों का ही मूल्यांकन किया जाएगा।*

(viii) *प्रत्येक प्रश्न के लिए केवल एक ही सही विकल्प है। एक विकल्प से अधिक उत्तर देने पर अंक नहीं दिये जाएँगे।*

(ix) *ऋणात्मक अंकन नहीं होगा।*

खण्ड-क

I. नीचे दो अपठित गद्यांश दिए गए हैं। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए: **1×10=10**

(अपठित गद्यांश- I)

मनुष्य के लिए भोजन एक सबसे महत्वपूर्ण विषय है। भोजन के लिए लोग न जाने क्या-क्या करते हैं और न जाने कहाँ से कहाँ तक चले जाते हैं। फिर भी हमारी दुनिया की एक बड़ी सच्चाई है कि रोज लगभग 70 करोड़ लोग भूखे रह जाते हैं, जिनमें से करीब 25 करोड़ लोग भुखमरी जैसी स्थिति में रहने को मजबूर हैं। दुनिया में बहुत प्रयासों के बावजूद खाद्य असुरक्षा की समस्या बढ़ती चली जा रही है। जलवायु परिवर्तन, अत्यधिक बारिश या कम बारिश के कारण भी सामान्य खाद्यान्न उत्पादन पर गहरा असर पड़ रहा है। दुनिया में एक बड़े इलाके में स्थायी रुप से खेती प्रभावित होने लगी है। लोग खेती छोड़कर दूसरे व्यवसायों में लगने को मजबूर हो रहे है और खेती करने वालों की संख्या घट रही है। कृषि उत्पादों की कीमत बढ़ रही है और लगे हाथ मंदी का दौर भी चल ही रहा है। तो कुल मिलाकर दुनिया में यह एक बड़ी चिंता है कि आने वाले समय में वंचितों या भूखे लोगों का पेट कैसे भरा जाएगा? ऐसे में, 'ब्ल्यू फूड' की चर्चा दिनोंदिन तेज होती जा रही है। 'ब्ल्यू फूड' मतलब जलीय खाद्य पदार्थ।

इसमें कोई शक नहीं कि हमें पानी से मिलने वाले खाद्य पदार्थों के बारे में पूरी जानकारी है, लेकिन हमने कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जलीय खाद्य पदार्थों की क्षेत्र में कितनी संभावना है।

खाद्य आपूर्ति की हमारी योजनाओं में थल भाग या खेतों-वनों में पैदा होने वाले की ही बहुलता होती है। ये 'ब्ल्यू फूड' कई खाद्य प्रणालियों का महत्वपूर्ण घटक है फिर भी खाद्य नीति बनाते समय इन पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। हमें अपनी खाद्य नीति में जलीय खाद्य पदार्थों को भी शामिल करके खाद्य सुरक्षा का विस्तार करना चाहिए। भारत में ओडिशा या दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में दोपहर के भोजन में 'ब्ल्यू फूड' के ही एक प्रकार मछली का उपयोग शुरू हो रहा है, लेकिन इस कार्य को बड़े पैमाने पर उन तमाम क्षेत्रों में तो किया ही जा सकता है, जहाँ जलीय खाद्य पदार्थों की प्रचुर उपलब्धता है। जलीय खाद्य पदार्थ, मीठे पानी और समुद्री परिवेश से प्राप्त पशु, पौधे और शैवाल दुनिया में 3.2 अरब से भी अधिक लोगों को प्रोटीन की आपूर्ति करते हैं। दुनिया के कई तटीय, ग्रामीण समुदायों में यह पोषण का मुख्य आधार है। यह बात भी छिपी नहीं है कि जलक्षेत्र 80 करोड़ से अधिक लोगों की आजीविका का आधार है।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

लेकिन इतना विशाल क्षेत्र होने के बावजूद दुनिया में लोग भूखे सोने को मजबूर हैं। पोषण का बड़ा अभाव है। हमें जमीन आधारित खाद्य प्रणलियों की सीमा और उसके खतरों को भी समझना चाहिए। गौर कीजिए, ये खाद्य प्रणालियाँ संपूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में एक चौथाई के लिए जिम्मेदार हैं अत: जलीय खाद्यों को बढ़ावा देने के बारे में हमें गंभीरता से सोचना चाहिए। यह पौष्टिक और टिकाऊ आधार है। जिन देशों में जलीय खाद्य की संभावना ज्यादा है, उन देशों को अपने यहाँ भोजन स्रोत में परिवर्तन पहले करना चाहिए। इस दिशा में प्रयास तेज होने चाहिए। एक सभ्य दुनिया में भोजन से जुड़े नैतिक दबावों के बजाय ज्यादा जरुरी यह है कि किसी भी इंसान को भूखे न सोना पड़े।

1. प्रस्तुत गद्यांश का वर्ण्य विषय हो सकता है– **1**

(a) बढ़ती खाद्य समस्या **(b)** खाद्य असुरक्षा की समस्या

(c) जलीय खाद्य की जरूरत **(d)** भुखमरी की समस्या

2. उपरोक्त गद्यांश के आधार पर बताइए कि खाद्यान्न उत्पादन कम क्यों हो रहा है? **1**

(a) कृषि योग्य भूमि का कम होना **(b)** धरती के तापमान का बढ़ना

(c) सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भरता **(d)** लोगों की कृषि कार्यों में अरुचि

3. दिनोंदिन बढ़ती खाद्य समस्या से कैसे निपटा जा सकता है? **1**

(a) कृषि संबंधी उत्पाद बढ़ाकर **(b)** जलीय खाद्य पदार्थों का सेवन कर

(c) फल-सब्जियों का सेवन कर **(d)** डेयरी उत्पादों का सेवन कर

4. जलीय खाद्य पदार्थ से क्या अभिप्राय है? **1**

(a) जल से पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ

(b) जल में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ

(c) नदियों के आस-पास पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ

(d) पानी के स्त्रोतों के आस-पास पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ

5. हमारी खाद्य आपूर्ति की योजनाओं में किन उत्पादों पर विचार नहीं किया जाता? **1**

(a) खेतों मे पैदा होने वाले उत्पाद **(b)** पशुओं से मिलने वाले उत्पाद

(c) जल में पैदा होने वाले उत्पाद **(d)** वनों से मिलने वाले उत्पाद

6. पूर्वी या दक्षिण भारतीय राज्यों में 'ब्ल्यू फूड' के रुप में कौन-सा फूड खाया जाता है? **1**

(a) मछली **(b)** झींगा

(c) शैवाल **(d)** केकड़ा

7. दुनिया के कई तटीय और ग्रामीण समुदायों में भोजन का मुख्य आधार है– **1**

(a) खाद्यान्न **(b)** समुद्री खाद्य पदार्थ

(c) डेयरी उत्पाद **(d)** जलीय खाद्य पदार्थ

8. जमीन आधारित खाद्य प्रणालियाँ जिम्मेदार हैं– **1**

(a) जमीन को बंजर बनाने में **(b)** जमीन को उपजाऊ बनाने में

(c) ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन के लिए **(d)** खाद्यान्न की समस्या के लिए

9. अपने भोजन-स्त्रोत में किन देशों को पहले परिवर्तन करना चाहिए? **1**

(a) जो देश नदियों के किनारे बसे हैं।

(b) जो देश तालाबों-पोखरों के किनारे बसे हैं।

(c) जिन देशों में जलीय खाद्य की संभावना अधिक है।

(d) जिन देशों में मांसाहारी भोजन अधिक खाया जाता है।

10. 'आजीविका' शब्द का अर्थ गद्यांश के आधार पर है– **1**

(a) जीवन **(b)** पालन - पोषण

(c) व्यवसाय **(d)** रोजी - रोटी

अथवा

(अपठित गद्यांश- II)

एक युवा अपनी जोश और ताकत से पूरी तरह ओत-प्रोत होता है। युवा पीढ़ी किसी भी समाज और देश की रीढ़ की हड्डी होती है। किसी भी देश के युवा ही उस देश का भविष्य तय करते हैं। इसकी बानगी हम स्वाधीनता संग्राम मे देख चुके हैं।

युवा की सबसे बड़ी खासियत है कि वह फौलादी जिगर, दृढ़ इच्छा शक्ति, जोखिम लेने की क्षमता और कुछ नया करने की ललक रखते है। जब युवाओं की बात हो तो भला स्वामी विवेकानंद को कौन भूल सकता है, जो आज भी दुनिया के लाखों युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है। युवाओं को अवसर दिए बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता है। आज भारत को हम सबसे बड़ा युवा देश कह सकते हैं, वह इसलिए नहीं कि देश अभी-अभी आज़ाद हुआ है बल्कि इसलिए क्योंकि इस समय भारत में युवा वर्ग की जनसंख्या पूरे विश्व के देशों से अधिक है।

युवा की विशेषता यही है कि उसके काम में तेजी, फुर्ती, और एक नया जोश है, उसमें ऊर्जा की भरमार है। पर हाँ, यह नहीं कि युवाओं से बड़े, जिन्हें हम बुजुर्ग कह सकते हैं, उनकी जरूरत नहीं है, ऐसा कहना उचित नहीं है। बुजुर्ग भी देश के विकास के लिए उतने ही ज़रूरी हैं जितने युवा। इन दोनों के ताल-मेल से बड़े से बड़े कार्य को जल्द से जल्द और एक बेहतर तरीके से कर सकते हैं। बड़े बुजुर्ग अपने अनुभव और युवा अपनी ऊर्जा का उपयोग कर देश को नई उपलब्धि दिला सकते हैं। पर देश का दुर्भाग्य ही समझो कि युवा और बुजुर्गों के ताल-मेल में कमी आ रही है। हमारी संस्कृति जिसमें इन युवाओं को अपने बुजुर्गों से सीखना चाहिए वे उनसे दूर होते जा रहे हैं। आज का आधुनिकीकरण दोनों वर्गों में जैसे दीवार बन गया हो।

अब वक्त आ गया है कि युवा सक्रिय राजनीति में प्रवेश करें क्योंकि हमारी राजनीति बूढ़ी हो गई है और यह हमारे देश की अपेक्षा को पूरा नहीं कर सकती। भ्रष्टाचार को लगाम लगाने के लिए युवाओं को अब तैयार होना होगा। युवाओं को एक जिम्मेदार नागरिक बनना होगा। पढ़े-लिखे, ज्यादातर युवा राजनीति से दूसरी बनाए रखते हैं, लेकिन कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा। ठीक उसी प्रकार राजनीति में आए बिना राजनीति को शुद्ध करना संभव नहीं है। अत: मै चाहता हूँ कि युवा राजनीति में प्रवेश करें। तभी देश के संसाधनों का सही इस्तेमाल होगा और तब जाकर कहीं शोषित-वंचित वर्ग को उनका हक मिल सकता है।

अत: आज के युवाओं को अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए और कोई भी काम व्यक्तिगत लाभ की बजाय समाज तथा देश हित में करना चाहिए। परिवार से समाज बनता है और समाज से देश बनता है। आज की युवा पीढ़ी का अपने परिवार की ओर उदासीनता देख मेरा मन काफी व्यथित होता है। माँ-बाप सीमित संसाधनों में भी अपने बच्चों को तमाम सुख सुविधा देने का भरसक प्रयास करते हैं, परंतु माँ-बाप का बोझ आज की हमारी युवा पीढ़ी नहीं उठा पा रही है। यह बड़े ही शर्म की बात है जिसने हमारी दुनिया को सजाया हो उसे हम युवा वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। उनकी कुछ बुनियादी जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाते। और अगर एक युवा इतना भी नहीं कर सकता तो यह युवा-पीढ़ी के लिए शर्म की बात है। अत: हमारे युवाओं को अपने परिवार के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनना होगा। मैं तो सोचता हूँ कि युवा पीढ़ी के रहते वृद्धाश्रम बनाना ही बड़े शर्म की बात है।

समाज में हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाना भी युवाओं की ही सामाजिक जिम्मेदारी है। अर्थात् एक स्वस्थ समाज की संकल्पना तभी पूरी हो सकती है, जब हर एक युवा व्यक्ति ईमानदारी से अपने परिवार, समाज और देश के प्रति छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को पूरा करेगा।

11. भारत को 'युवा भारत' क्यों कहा जाता है? **1**

(a) स्वतंत्रता प्राप्ति को अभी बहुत समय न होने के कारण

(b) भारत की जनसंख्या विश्व में बहुत अधिक होने के कारण

(c) भारत में युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण

(d) देश के विकास में युवाओं की सहभागिता अधिक होने के कारण

12. युवा पीढ़ी को किसी भी देश की 'रीढ़ की हड्डी' क्यों कहा गया है? **1**

(a) उसे दृढ़ता प्रदान करने की शक्ति के कारण **(b)** उसका भविष्य निर्माता होने के कारण

(c) उसकी स्वतंत्रता की रक्षा करने के कारण **(d)** जोश और ताकत से ओत-प्रोत होने के कारण

13. 'युवाओं को अवसर दें' से स्वामी विवेकानंदजी का क्या अभिप्राय था? **1**

(a) देश की राजनीति में भागीदारी **(b)** देश के विकास में भागीदारी

(c) देश की रक्षा में भागीदारी **(d)** देश की योजनाओं में भागीदारी

14. देश के विकास के लिए युवाओं और बुजर्गों के बीच तालमेल क्यों जरूरी है? **1**

(a) युवाओं का जोश और बुजुर्गों का संयम देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

(b) युवाओं की ऊर्जा और बुजुर्गों का अनुभव देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

(c) युवाओं की गति और बुजुर्गों का प्रबंधन देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

(d) युवाओं की फुर्ती और बुजुर्गों का धैर्य देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

15. युवाओं और बुजुर्गों के बीच बढ़ती खाई का कारण है— **1**

(a) तकनीक का विकास (b) व्यस्त जीवन-शैली

(c) पाश्चात्य संस्कृति (d) आधुनिकीकरण

16. विवेकानंदजी की दृष्टि में युवाओं के लिए शर्म की बात क्या है? **1**

(a) बड़े-बुजुर्गों की उपेक्षा (b) युवा-पीढ़ी की संवेदनहीनता

(c) वृद्धाश्रमों का बनना-बनाना (d) युवाओं का गैर-जिम्मेदार रवैया

17. देश के युवाओं से राजनीति में प्रवेश करने का आग्रह करने के विषय में कौन-सा तर्क असत्य है? **1**

(a) देश की राजनीति बूढ़ी हो गई है। (b) लोगों की अपेक्षाएँ अधूरी रह गई हैं।

(c) देश की रक्षा करने के लिए (d) देश में फैले भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए।

18. 'कमल तोड़ना है तो कीचड़ में उतरना ही होगा' का आशय है— **1**

(a) गंदगी को दूर करना है तो गंदगी में जाना ही होगा।

(b) कमल को पाना है तो गंदगी में पाँव रखना ही होगा।

(c) कुछ अच्छा पाने के लिए गंदगी में पैर रखना ही पड़ता है।

(d) देश में बदलाव लाने के लिए राजनीति का हिस्सा बनना पड़ता है।

19. एक स्वस्थ समाज की संरचना के लिए आवश्यक है— **1**

(a) अन्याय के खिलाफ़ आवाज उठाना (b) ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी पूरी करना

(c) युवाओं और बुजुर्गों की सहभागिता (d) आधुनिक तकनीक का प्रयोग

20. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक है— **1**

(a) आज की युवा पीढ़ी (b) युवा पीढ़ी और देश का भविष्य

(c) युवा पीढ़ी की समस्याएँ (d) युवा पीढ़ी और बुजुर्ग

II. नीचे दो अपठित पद्यांश दिए गए हैं। किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए : 1×5=5

(अपठित पद्यांश- I)

माँ मेरे अकेलेपन के बारे में सोच रही है
पानी गिर नहीं रहा पर, गिर सकता है किसी भी समय
मुझे बाहर जाना है और माँ चुप है कि मुझे बाहर जाना है।
यह तय है
कि मैं बाहर जाऊँगा तो माँ को भूल जाऊँगा
जैसे मैं भूल जाऊँगा उसकी कटोरी
उसका गिलास
वह सफेद साड़ी जिसमें काली किनारी है
मैं एकदम भूल जाऊँगा
वह कभी कुछ नहीं कहती
हालाँकि नींद में
वह खुद एक पक्षी की तरह लगती है
जब वह बहुत ज्यादा थक जाती है
तो उठा लेती है सुई और तागा
मैंने देखा है कि जब सब सो जाते हैं
तो सुई चलाने वाले उसके हाथ
देर रात तक
समय को धीरे-धीरे सिलते हैं

जिसे इस समूची दुनिया में माँ
और सिर्फ मेरी माँ पहनती है
उसके बाद सर्दियाँ आ जायेंगी
और मैंने देखा है कि सर्दियाँ जब भी आती हैं
तो माँ थोड़ा और झुक जाती है
अपनी परछाई की तरफ
ऊन के बारे में उसके विचार
बहुत सख्त हैं
मृत्यु के बारे में बेहद कोमल
पक्षियों के बारे में
जैसे वह मेरा फटा हुआ कुर्ता हो
पिछले साठ बरसों से
एक सुई और तागे के बीच
दबी हुई है माँ
हालाँकि वह खुद एक करघा है
जिस पर साठ बरस बुने गये हैं।
धीरे-धीरे तह पर तह
खूब मोटे और गझिन और खुरदुरे
साठ बरस

21. प्रस्तुत कविता का मूल भाव है— **1**

(a) प्रगति के लिए रिश्तों में आए बिखराव की पीड़ा
(b) सुविधा के लिए रिश्तों में आए बिखराव की पीड़ा
(c) आधुनिक जीवन की विवशता
(d) अपनों से बिछुड़ने की विवशता

22. माँ की चुप्पी के कारण के विषय में कौन-सा कथन असत्य है? **1**

(a) बेटे का अजनबी प्रदेश में जाना
(b) अजनबी प्रदेश में बेटे का अकेलापन
(c) बेटे का उससे बिछड़कर दूर जाना
(d) अपने अकेलेपन की चिंता

23. 'पानी गिरा नहीं
पर गिर सकता है किसी भी समय' का आशय है— **1**

(a) किसी भी समय वर्षा हो सकती है।
(b) माँ की आँखों से कभी भी आँसू गिर सकते हैं।
(c) माँ के सब्र का बाँध कभी भी टूट सकता है।
(d) माँ की हिम्मत कभी भी जवाब दे सकती है।

24. कवि की चिन्ता का प्रमुख कारण है— **1**

(a) बढ़ती उम्र में माँ का एकाकीपन
(b) बढ़ती उम्र में माँ का स्वास्थ्य
(c) शहरी परिवेश में माँ को भूल जाना
(d) शहरी परिवेश से जुड़ी चीजें भूल जाना

25. माँ सुई और तागे से क्या सिलने का प्रयास कर रही है? **1**

(a) बेटे के फटे कुर्ते को
(b) समय की गति को
(c) रिश्तों को
(d) गरीबी को

अथवा

(अपठित पद्यांश- II)

थकी-हारी लौटी है वो ऑफिस से अभी
टिफिन बॉक्स को रसोई में रखती है
मुँह पर पानी के छीटें मारती है
बाहर निकल आई लट को वापस खोंसती है
मुझे हटाते हुए कहती है—हटो, तुम्हें नहीं मिलेगी कोई चीज।
होठों को तिरछा करती अजीब ढंग से मुस्कराती है
मुश्किल है उस मुस्कुराहट का ठीक-ठीक अर्थ
समझा पाना

बालों में
आँखों को हौले से दबाती है हथेलियों से
उठती है और रसोईघर की ओर जाने को होती है
मैं कहता हूँ, बैठो, तुम, आज मैं चाय बनाता हूँ!
मेरी आवाज़ की नोक मुझी को चुभती है।
गैस जलाकर चाय का पानी चढ़ाता हूँ
दूसरे ही पल आवाज़ लगाता हूँ
सुनो शक्कर किस डब्बे में रखी है
और चाय की पत्ती कहाँ है?
साड़ी का पल्लू कमर में खोंसती हुई वो आती है
जैसे कहती हो यह मेरी सृष्टि है
तुम नहीं जान पाओगे कभी
कि किन बादलों में रखी हैं बारिशें, किनमें रखा है कपास
कोई डब्बा खोलते हुए कहती है :
यह तो मैं हूँ कि अबेर रखा है सब कुछ
वरना तुम तो ढूँढ़ नहीं पाते अपने आप को
जाओ बाहर जाकर टी.वी. देखो
एक काम पूरा नहीं करोगे और फैला दोगे
मेरी पूरी रसोई!

26. प्रस्तुत कविता का वर्ण्य विषय है— 1

(a) भारतीय समाज की पुरुषवादी सोच का वर्णन
(b) चाँद तक पहुँचने वाली महिला की वास्तविक स्थिति का वर्णन
(c) भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति का वर्णन
(d) कामकाजी महिलाओं की स्थिति का वर्णन

27. 'मेरी आवाज़ की नोक मुझी को चुभती है' आशय है— 1

(a) पति को अपनी आवाज़ नोक जैसी लगती है।
(b) पति को अपनी तीखी आवाज़ अच्छी नहीं लगती।
(c) पति को अपनी ही भारी-भरकम आवाज़ चुभती है।
(d) पति को अपनी ही आवाज़ व्यंग्यपूर्ण लगती है।

28. 'किन बादलों में रखी हैं बारिशें, किनमें रखा है कपास' का क्या अभिप्राय है? 1

(a) कौन-से बादल बरसेंगे और कौन-से नहीं
(b) कौन-से बादल बरसेंगे और कौन-से रुई की तरह उड़ जाएँगे
(c) घर का कौन-सा समान कहाँ रखा है?
(d) रसोई में चीनी कहाँ रखी और चायपत्ती कहाँ

29. 'यह तो मैं हूँ कि अबेर रखा है सब कुछ'—पत्नी ने क्या अबेर रखा है? 1

(a) रसोईघर की जिम्मेदारी
(b) बच्चों और पति की जिम्मेदारी
(c) घर और बाहर की जिम्मेदारी
(d) पूरी गृहस्थी की जिम्मेदारी

30. 'महिला द्वारा पल्लू कमर में खोसना' का अर्थ है— 1

(a) वह रसोईघर की लड़ाई लड़ने को तैयार है।
(b) वह रसोईघर में चाय बनाने को तैयार है।
(c) वह पति को चीनी चायपत्ती बताने को तैयार है।
(d) वह बिखरी रसोई समेटने को तैयार है।

खण्ड-ख

III. 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित छह प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर के लिए सही उत्तर वाले विकल्पों का चयन कीजिए: 1×5=5

31. जनसंचार के माध्यमों में से सबसे आधुनिक माध्यम है— 1

(a) रेडियो
(b) समाचार-पत्र
(c) इंटरनेट
(d) टेलीविजन

32. रेडियो प्रसारण के लिए प्रस्तुत की जाने वाली समाचार-कॉपी को तैयार किया जाना चाहिए— 1

(a) सिंगल स्पेस
(b) डबल स्पेस
(c) बिना स्पेस
(d) ट्रिपल स्पेस

33. भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला? **1**

(a) सन् 1556, गोवा में (b) सन् 1556, कलकत्ता में

(c) सन् 1856, गोवा में (d) सन् 1856, कलकत्ता में

34. भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों में काम करने वाला पत्रकार कहलाता है— **1**

(a) पूर्णकालिक पत्रकार (b) अंशकालिक पत्रकार

(c) अल्पकालिक पत्रकार (d) फ्रीलांसर पत्रकार

35. समाचार लेखन के पहले चार ककार (क्या, कौन, कब और कहाँ) आधारित होते हैं— **1**

(a) सूचनाओं और तथ्यों पर (b) व्याख्या और विवरण पर

(c) विश्लेषण और तथ्यों पर (d) व्याख्या और सूचना पर

36. सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं तथा आँकड़ों के आधार पर तैयार रिपोर्ट कहलाती है— **1**

(a) खोजी रिपोर्ट (b) इन डेप्थ रिपोर्ट

(c) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (d) विवरणात्मक रिपोर्ट

खण्ड-ग

IV. निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही उत्तर वाले विकल्पों का चयन कीजिए: 1×5=5

सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे
इंतज़ार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं?
(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा।)

37. प्रस्तुत काव्यांश का उद्देश्य है— **1**

(a) मीडियाकर्मियों की संवदेनशून्यता दर्शाना (b) मीडियाकर्मियों की संवदेनशीलता दर्शाना

(c) मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व को दर्शाना (d) मीडिया की बढ़ती व्यावसायिकता को दर्शाना

38. कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति से बार-बार अपना दु:ख बताने के लिए क्यों कहता है? **1**

(a) अपाहिज व्यक्ति के साथ संवेदनशीलता दर्शाने के लिए (b) अपाहिज के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने के लिए

(c) अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए (d) अपने कार्यक्रम को व्यावसायिक रूप से सफल बनाने के लिए

39. कार्यक्रम संचालक अपाहिज व्यक्ति की स्थिति को खुद इशारे से बताने की कोशिश क्यों करता है? **1**

(a) अपाहिज व्यक्ति के दु:खी और अक्षम होने के कारण

(b) अपाहिज व्यक्ति द्वारा अपना दु:ख न बताने के कारण

(c) अपाहिज व्यक्ति द्वारा दु:ख के हाव-भाव की मुद्रा नहीं बना पाने के कारण

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE

(d) अपाहिज व्यक्ति के दु:ख के हाव-भाव से अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के कारण

40. 'यह अवसर खो देंगे आप'—पंक्ति में कार्यक्रम संचालक द्वारा किस अवसर को खो देने की बात कही गई है? **1**

(a) अपनी पीड़ा और अपंगता को समाज के सामने रखने का अवसर

(B) अपनी पीड़ा से सामाजिक सहानुभूति बटोरने का अवसर

(c) अपनी पीड़ा के माध्यम से कैमरे के सामने आने का अवसर

(D) अपनी पीड़ा से सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने का अवसर

41. 'इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का' पंक्ति द्वारा दर्शकों की किस मनोवृत्ति को दर्शाया गया है? **1**

(a) संवदेनशीलता को
(b) भावुकता को
(c) मानवीयता को
(d) अमानवीयता को

V. निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्पों का चयन कीजिए: **1×5=5**

भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई। विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया। बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अत: यह प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ रह गया। तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगीं और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे।

42. गद्यांश के आधार पर भक्तिन का दुर्भाग्य किसे कहा गया है? **1**

(a) उसके पति का असमय मर जाना।
(b) उसकी बेटी का असमय विधवा हो जाना।
(c) उसके द्वारा तीन-तीन कन्याओं का जन्म दिया जाना।
(d) उसके पिता की अकाल मृत्यु का हो जाना।

43. भक्तिन का जिठौत अपने साले से चचेरी बहन का विवाह क्यों करवाना चाहता था? **1**

(a) युवावस्था में ही बहन के विधवा हो जाने के कारण
(b) चचेरी बहन को वैधव्य के दु:ख से बचाने के लिए
(c) चचेरी बहन का घर फिर से बसाने की इच्छा के कारण
(d) अपनी चाची की जायदाद को पाने के लिए

44. भक्तिन के जेठों और जिठौतों को भक्तिन के दामाद के मरने पर आशा की कौन-सी किरण दिखाई दी? **1**

(a) अपनी पसंद के वर से चचेरी बहन का विवाह करने की
(b) भक्तिन का आत्मसम्मान नष्ट कर उसकी संपत्ति हड़पने की
(c) भक्तिन और उसकी बेटियों पर अपना हक जताने की
(d) भक्तिन और उसकी बेटियों को अपने साथ रखने की

45. विधवा बहन द्वारा वर को नापसंद किए जाने पर जिठौतों ने क्या किया? **1**

(a) उसके पुनर्विवाह का विचार छोड़ दिया।
(b) उसके लिए दूसरे वर की तलाश में लग गए।
(c) बहन की पसंद का वर ढूँढ़ने में लग गए।
(d) अपनी पसंद का वर उस पर थोपने का उपाय सोचने लगे।

46. भक्तिन के जेठ और जिठौत किस बात के लिए दृढ़-निश्चय थे? **1**

(a) विधवा बहन का पुनर्विवाह करवाने के लिए
(b) अपनी पसंद के वर से बहन का पुनर्विवाह करवाने के लिए
(c) बाहर के वर से बहन का पुनर्विवाह करवाने के लिए
(d) किसी भी प्रकार से भक्तिन की संपत्ति हड़पने के लिए

VI. निम्नलिखित छह प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कीजिए: **1×5=5**

47. 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए कि बाजार का जादू किन लोगों को सबसे अधिक प्रभावित करता है? **1**

(a) जिनकी जेब खाली हो, पर मन पर नियंत्रण न हो।
(b) जिनकी जेब भरी हो, पर मन पर नियंत्रण न हो।
(c) जिनकी जेब और मन दोनों खाली हों।
(d) जिनकी जेब और मन दोनों भरे हों।

48. 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक को इंदरसेना पर पानी फेंकने की बात सही क्यों नहीं लगती? **1**

(a) क्योंकि वह समाज-सुधार सभा का उपमंत्री था।
(b) क्योंकि इससे गलियों में कीचड़ हो जाता था।
(c) क्योंकि इससे घरों के बाहर शोर होता था।
(d) क्योंकि वह इसे अंधविश्वास मानता था।

49. 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर बताइए कि नए राजकुमार ने विलायत से आते ही लुट्टन सिंह को राजमहल से क्यों निकाल दिया? **1**

(a) उसके भारी भरकम दैनिक भोजन-व्यय के कारण
(b) भारतीय पारंपरिक खेलों में रुचि न होने के कारण

(c) मैनेजर द्वारा पहलवान के विरुद्ध भड़काये जाने के कारण (d) विलायत में पला-बढ़ा होने के कारण

50. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर बताइए कि बच्चे नीड़ों से क्यों झाँक रहे होंगे? 1

(a) जल्दी-जल्दी दिन के ढलने के कारण (b) चिड़िया द्वारा लाया भोजन पाने के लिए
(c) माँ के शाम होने पर भी घोंसले में न पहुँचने के कारण (d) घोंसले में अकेले होने के भय की आशंका से

51. कविता की उड़ान के विषय में कौन-सा कथन सत्य है? 1

(a) कविता की उड़ान प्राकृतिक होती है। (b) कविता कल्पनाओं की उड़ान है।
(c) कविता भावनाओं की अभिव्यक्ति है। (d) कविता की उड़ान असीमित होती है।

52. 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता के आधार पर बताइए कि कवि अपनी प्रियतमा को भूलने का दंड क्यों चाहता है? 1

(a) क्योंकि प्रिय के स्नेह के उजाले ने उसे घेर लिया है।
(b) क्योंकि वह स्वयं को प्रियतमा के योग्य नहीं समझता है।
(c) क्योंकि वह अंधकार को अपने शरीर पर झेलना चाहता है।
(d) क्योंकि अत्यधिक स्नेह के कारण उसकी आत्मा कमजोर हो गई है।

VII. निम्नलिखित छह प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए: 1×5=5

53. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू ऑफिस में दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कैसे किया करते थे? 1

(a) अपने बिखरे सामान को समेटने की जिम्मेदारी अपने मातहतों पर न डालकर
(b) चलते-चलते जूनियरों (अधीनस्थों) से कोई मनोरंजक बात कर
(c) छुट्टी के समय जूनियरों के साथ चाय-समोसा खाकर
(d) छुट्टी के समय सेक्शन की सुस्त घड़ी को सही करके

54. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की कौन-सी बात प्रशंसनीय लगती थी? 1

(a) गरीब रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा का भाव रखना (b) प्राचीन संस्कारों को भूल आधुनिकता के रंग में रंगना
(c) मानवीय संबंधों और संस्कारों की उपेक्षा (d) महत्त्वाकांक्षी और प्रगतिशील होना

55. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू का अपने परिवार से मतभेद क्यों रहता था? 1

(a) क्योंकि उनकी दृष्टि में नई सोच और नए विचार महत्त्वहीन थे।
(B) क्योंकि वे परंपरावादी और सिद्धांतवादी थे।
(c) क्योंकि उनके और उनके परिवार के बीच अनबन थी।
(D) क्योंकि उनका ध्यान आध्यात्मिकता की ओर मुड़ गया था।

56. 'जूझ' कहानी के कथानायक आनंदा ने अपने पढ़ने की बात अपनी माँ से ही क्यों की? 1

(a) पिता के गुस्सैल स्वभाव के कारण (b) माँ के साथ अत्यधिक लगाव के कारण
(c) दिन-रात माँ के साथ रहने के कारण (d) पिता से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद न होने के कारण

57. 'जूझ' कहानी का नायक आनंदा खेतों में काम क्यों करता था? 1

(a) अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए (b) पिता की जिम्मेदारियों का भार उठाने के लिए
(c) स्कूल जाकर पढ़ने-लिखने से बचने के लिए (d) अपने पिता के कामों में हाथ-बँटाने के लिए

58. 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए कि मास्टर सौंदलगेकरजी का आनंदा पर क्या प्रभाव पड़ा? 1

(a) वह पढ़ाई-लिखाई में रुचि लेने लगा। (b) वह खेतों के काम में रुचि लेने लगा।
(c) वह स्कूल जाने में रुचि लेने लगा। (d) वह कविता लेखन-पठन में रुचि लेने लगा।

❑❑❑

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE

उत्तरमाला

खण्ड-क

1. **(a)** बढ़ती खाद्य समस्या

व्याख्या: अनवरत हो रहे प्राकृतिक परिवर्तनों के कारण खेतों के प्रति लोगों की अरुचि से खाद्यान्न उत्पादनों पर गहरा असर हुआ और लोग दूसरे व्यवसायों की तरफ रुख करने लगे, इससे खाद्य समस्या बढ़ती जा रही है।

2. **(b)** धरती के तापमान का बढ़ना

व्याख्या: कार्बनडाई आक्साइड, मिथेन, जल वाष्प आदि गैसों से वातावरण में तापमान की अधिकता होने के कारण खाद्य उत्पादनों में कमी हो रही है।

3. **(b)** जलीय खाद्य पदार्थों का सेवन कर

व्याख्या: जलीय खाद्य पदार्थों की उपलब्धता व उनसे मिलने वाले पौष्टिक घटकों को आजीविका में शामिल करने की जानकारी लोगों तक पहुँचा कर इस समस्या से निजात मिल सकती है।

4. **(b)** जल में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थ

5. **(c)** जल में पैदा होने वाले उत्पाद

व्याख्या: आमतौर पर लोग खेती-बाड़ी करने व उससे मिलने वाली खाद्य सामग्री से ही परिचित हैं, जल से मिलने वाले उत्पादों की जानकारी सीमित क्षेत्र तक ही निहित है। इस कारण खाद्य आपूर्ति की योजनाओं में जलीय उत्पादों पर विचार नहीं किया गया।

6. **(a)** मछली

व्याख्या: 'ब्ल्यू-फूड' अर्थात् एक प्रकार की मछली-दक्षिण भारत में दोपहर के खाने में इसका सेवन किया जाता है।

7. **(d)** जलीय खाद्य पदार्थ

व्याख्या: तटीय क्षेत्रों व ग्रामीण समुदायों के लोगों को जलीय खाद्य उत्पादों की पूर्ण जानकारी होती है और जलीय खाद्यान्न उनके भोजन का महत्वपूर्ण भाग है।

8. **(c)** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के लिए

व्याख्या: मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनों की 25% मात्रा, दुनिया भर की कृषि आधारित खाद्य प्रणालियों से उत्पन्न होती है।

9. **(c)** जिन देशों में जलीय खाद्य की संभावना अधिक है।

व्याख्या: तटीय क्षेत्रों, जहाँ जलीय खाद्य पदार्थों की अधिकता हो ऐसे स्थानों पर जलीय खाद्य मीठे पानी और समुद्री परिवेश से प्राप्त पशु पौधे और शैवाल आदि प्रोटीन की आपूर्ति करने वाले खाद्यों को भोजन में शामिल करना चाहिए।

10. **(c)** व्यवसाय

अथवा

11. **(c)** भारत में युवाओं की संख्या अधिक होने के कारण

व्याख्या: युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है और पूरे विश्व में मात्र भारत में ही युवा वर्ग की जनसंख्या अधिक होने के कारण भारत को युवा-भारत कहा जाता है।

12. **(b)** उसका भविष्य निर्माता होने के कारण

व्याख्या: देश का बड़ा वर्ग होने के कारण देश का आने वाला कल भी युवा ही तय करता है। इस कारण भविष्य निर्माता युवा पीढ़ी को 'रीढ़ की हड्डी' की उपमा दी गई है।

OSWAAL BOOKS® LEARNING MADE SIMPLE

13. **(b)** देश के विकास में भागीदारी

व्याख्या: स्वामी जी के अनुसार युवा वह है जो दृढ़ इच्छा शक्ति, जोखिम लेने की क्षमता और कुछ नया करने की ललक रखता है। युवाओं को अवसर देकर परिवर्तन का एक सुनहरा कल देखा जा सकता है, युवाओं की शक्ति एवं सामर्थ्य देश के विकास में भागीदार हैं।

14. **(b)** युवाओं की ऊर्जा और बुजुर्गों का अनुभव देश को नई उपलब्धि दिलवा सकता है।

व्याख्या: युवा शक्ति को बुजुर्गों का अनुभव मिलने से सही दिशा धारा दी जा सकती है, एक ही दिशा में यह सामूहिक प्रयत्न राष्ट्र को नई उपलब्धि दिला सकता है।

15. **(d)** आधुनिकीकरण

व्याख्या: अंधानुकरण एवं चकाचौंध वाली इस दुनिया ने युवाओं को जहाँ आसमान छूने के ख्वाब दिखाए वहीं बुजुर्गों को जमीन से जोड़ रखा है। तकनीकी रूप से कमजोर बुजुर्ग वर्ग एवं अंधानुकरण की दौड़ में दौड़ते युवा वर्ग के बीच एक दूरी बन जाना ही उनके बीच की खाई है।

16. **(c)** वृद्धाश्रमों का बनना-बनाना

व्याख्या: स्वामी जी की परिभाषा में समर्थ शक्तिशाली और उत्साह से सरोबर व्यक्ति युवा है किन्तु वही युवा जब संवेदनहीन होकर बुजुर्गों को घर से बाहर कर वृद्धाश्रम में रहने की व्यवस्था करने लगे तो यह शर्म की बात है।

17. **(c)** देश की रक्षा करने के लिए

व्याख्या: देश की रक्षा के लिए नहीं वरन जिम्मेदार नागरिक बनकर भ्रष्टाचार को लगाम लगाने के लिए युवाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए।

18. **(d)** देश में बदलाव लाने के लिए राजनीति का हिस्सा बनना पड़ता है।

19. **(b)** ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी पूरी करना

व्याख्या: स्वस्थ समाज की संरचना के लिए आवश्यक है कि एक स्वस्थ एवं जिम्मेदार नागरिक का निर्माण किया जाए। ईमानदारी से इस जिम्मेदारी को पूरा कर स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

20. **(b)** युवा पीढ़ी और देश का भविष्य

21. **(d)** अपनों से बिछुड़ने की विवशता

व्याख्या: आगे बढ़ने और जीवन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए व्यक्ति चाहे अनचाहे अपनों से दूर जाने के लिए विवश हो ही जाता है। जिसे हम अपने घर अथवा नजदीकी रिश्तों में देख सकते हैं।

22. **(d)** अपने अकेलेपन की चिंता

व्याख्या: माँ वास्तव में अपने अकेलेपन की चिंता नहीं कर रही है वरन अपने बच्चे के बाहर जाने एवं उसके अकेले रहने की चिंता कर रही है।

23. **(b)** माँ की आँखों से कभी भी आँसू गिर सकते हैं।

व्याख्या: माँ कदाचित जानती है कि बच्चे को बाहर जाना ही होगा किंतु उसका मातृत्व आँखों से अश्रुओं के बहाने बहने को तत्पर हैं।

24. **(c)** शहरी परिवेश में माँ को भूल जाना

व्याख्या: भागदौड़ की इस दुनिया में जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करते-करते व्यक्ति अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो जाता है कि अपनों को भी भूल जाता है यही चिंता लेखक के माँ को भूल जाने की भी है।

25. **(b)** समय की गति को

अथवा

26. **(d)** कामकाजी महिलाओं की स्थिति का वर्णन

व्याख्या: अपने आप को भूलकर परिवार और कार्यस्थल की जिम्मेदारियों को निभाने वाली कामकाजी महिलाओं की स्थिति का अर्थपूर्ण वर्णन है।

27. **(d)** पति को अपनी ही आवाज व्यंग्यपूर्ण लगती है।

व्याख्या: अपने कार्य से लौटे पुरुष वर्ग को थकान मिटाने के लिए टी वी का रिमोट और चाय का प्याला हाथ में चाहिए किंतु वहीं काम-काजी पत्नी को आज बैठने का आग्रह और स्वयं के लिए चाय बनाने की भूमिका का चुनाव खुद उसे ही असहज लगता है।

28. **(c)** घर का कौन-सा समान कहाँ रखा है?

व्याख्या: क्योंकि घर का रसोईघर महिला की जिम्मेदारी है पुरुष नहीं जानता किस स्थान पर कौन-सा समान रखा है।

29. **(d)** पूरी गृहस्थी की जिम्मेदारी

व्याख्या: भारतीय समाज में महिला को परिवार की धूरी माना गया है उसके कारण ही घर आँगन सलीके से सजा हुआ है और, रिश्तों में गर्माहट एवं आपसी प्रेम बना हुआ है।

30. **(b)** वह रसोईघर में चाय बनाने को तैयार है।

खण्ड-ख

31. **(c)** इंटरनेट

व्याख्या: इंटरनेट ने संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बाँध दिया है। आज सूचनाओं का आदान-प्रदान, शिक्षा, विज्ञापन, मनोरंजन व हर छोटी-बड़ी जानकारी उपलब्ध कराने में इंटरनेट की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

32. **(d)** ट्रिपल स्पेस

व्याख्या: प्रसारण के लिए तैयार की गई कॉपी को कम्प्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए। पंक्ति में 12-13 शब्द होने चाहिए। पंक्ति के आखिर में कोई भी शब्द विभाजित और पंक्ति अधूरी नहीं होनी चाहिए।

33. **(a)** सन् 1556, गोवा में

व्याख्या: भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला, जिसका श्रेय पुर्तगालियों को जाता है। इसे ईसाई मिशनरियों ने धर्म-प्रचार की पुस्तकें छापने के लिए खोला था। छापाखाना के अंतर्गत अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि आती थीं।

34. **(d)** फ्रीलांसर पत्रकार

व्याख्या: स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले पत्रकार 'फ्रीलांसर पत्रकार' होते हैं। वे पत्रकार किसी विशिष्ट समाचार संस्था से सीधे नहीं जुड़े होते, बल्कि वह अलग-अलग अखबारों के लिए भुगतान के आधार पर कार्य करते हैं। एक ही समय में वह अलग-अलग समाचार संस्थानों के लिए लिख सकते हैं।

35. **(a)** सूचनाओं और तथ्यों पर

व्याख्या: प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं। समाचार को प्रभावी एवं पूर्ण बनाने के लिए ही इन छः ककारों का प्रयोग किया जाता है। प्रथम चार ककार समाचार का इण्ट्रो (मुखड़ा) व अन्तिम दो ककार समापन को निर्मित करते हैं। इंट्रो समाचार का प्रारम्भिक एवं महत्त्वपूर्ण भाग होता है।

36. **(b)** विवरणात्मक रिपोर्ट

व्याख्या: इन-डेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है और उसके आधार पर किसी घटना, समस्या या मुद्दे से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

खण्ड-ग

37. **(a)** मीडियाकर्मियों की संवेदनशून्यता दर्शाना

व्याख्या: "अपाहिज होकर आपको कैसा लगता है? यह बात सोचकर बताइए" जैसे शब्दों से मीडिया की संवेदनशून्यता पर करारा व्यंग्य किया गया है मीडिया के लोग किसी-न-किसी तरह से दूसरे के दु:ख को भी व्यापार का माध्यम बना लेते हैं।

38. **(d)** अपने कार्यक्रम को व्यावसायिक रूप से सफल बनाने के लिए

व्याख्या: कार्यक्रम-संचालक अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपाहिज के कष्ट को कम करने की बजाय उसके दर्द पर बेतुके सवाल कर क्रूरता की तमाम हदें पार कर जाते हैं।

39. **(d)** अपाहिज व्यक्ति के दु:ख के हाव-भाव से अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के कारण

व्याख्या: कार्यक्रम-संचालक अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए पीड़ित अपाहिजों को संकेतों द्वारा बताते हैं कि वह अपना दर्द इस प्रकार बताए जैसा वे चाहते हैं। यहाँ दर्द किसी का है और उसे अभिव्यक्त करने का तरीका कोई और बता रहा है।

40. **(a)** अपनी पीड़ा और अपंगता को समाज के सामने रखने का अवसर

व्याख्या: मीडिया वाले अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपाहिजों से ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछते हैं कि वे रोने लगे और न बता पाने पर उन्हें कहते है—"कोशिश करके बताइए। यदि आप इस समय नहीं बता पाएँगे तो सुनहरा अवसर खो देंगे।

41. **(d)** अमानवीयता को

व्याख्या: दर्शकों की मानसिकता है कि वे किसी की पीड़ा के चरम रूप का आनंद लेते हैं। वे भी संवेदनहीन हो गए हैं क्योंकि उन्हें भी अपंग व्यक्ति के रोने का इंतजार रहता है।

42. **(b)** उसकी बेटी का असमय विधवा हो जाना।

व्याख्या: भक्तिन का दुर्भाग्य यह था कि उसकी बड़ी लड़की किशोरी से युवती बनी ही थी कि उसका पति मर गया। वह असमय विधवा हो गई।

43. **(d)** अपनी चाची की जायदाद को पाने के लिए

व्याख्या: भक्तिन का जिठौत अपनी विधवा बहन की शादी अपने साले से करवाकर सारी संपत्ति अपने अधिकार में लेना चाहता था। किन्तु उनकी यह योजना सफल नहीं हो पाई और माँ-बेटी अपनी संपत्ति की देखभाल करने लगीं।

44. **(b)** भक्तिन का आत्मसम्मान नष्ट कर उसकी संपत्ति हड़पने की

व्याख्या: भक्तिन के दामाद की मृत्यु के बाद जेठों और उनके पुत्रों को सारी संपत्ति लेने के लिए आशा की एक किरण दिखाई दी कि विधवा बहिन का गठबंधन अपने बड़े जिठौत के साले से करवा दें जिससे सब कुछ उन्हीं के अधिकार में चला जाए। परंतु भक्तिन व उसकी लड़की समझदार थी, इसीलिए उन्होंने वर को नापसंद कर दिया।

45. **(d)** अपनी पसंद का वर उस पर थोपने का उपाय सोचने लगे

व्याख्या: भक्तिन की लड़की द्वारा वर को नापसंद किए जाने पर उसके जेठ और जिठौतों ने जबरदस्ती अपनी पसंद के विवाह-प्रस्ताव को थोपने का निर्णय लिया। वे संपत्ति के लिए रिश्तों की मान-मर्यादा तक तोड़ने को आतुर थे।

46. **(d)** किसी भी प्रकार से भक्तिन की संपत्ति हड़पने के लिए

47. **(b)** जिनकी जेब भरी हो, पर मन पर नियंत्रण न हो।

व्याख्या: जब मनुष्य के पास धन होता है तथा वस्तुएँ खरीदने की निर्णय क्षमता नहीं होती तब वह बाजार में आकर्षक वस्तुएँ देखकर उनके जादू में बँध जाता है। तथा वह अपनी शक्ति दिखाने के लिए निरर्थक चीजें खरीदता है। खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि जो चीजें आराम के लिए खरीदी थीं वे खलल डाल रही हैं और वे खरीदी हुई वस्तुएँ अनावश्यक लगने लगती हैं।

48. **(d)** क्योंकि वह इसे अंधविश्वास मानता था।

व्याख्या: लेखक का मानना था कि सूखे के दिनों में पानी की कमी होती है। ऐसी स्थिति में मेहनत से इकट्ठा किया गया पानी अंधविश्वास के नाम पर इंदर सेना पर फेंकना गलत है।

49. **(a)** उसके भारी भरकम दैनिक भोजन-व्यय के कारण

व्याख्या: विलायत से शिक्षा प्राप्त करके आए राजकुमार ने जब सत्ता संभाली तो राजकाज से लेकर महल के तौर-तरीकों में भी परिवर्तन कर दिए। मनोरंजन के साधनों में कुश्ती के स्थान पर घुड़दौड़ को शामिल कर लिया। अत: पहलवानों पर राजकीय खर्च का बहाना बनाकर उन्हें जवाब दे दिया गया।

50. **(c)** माँ के शाम होने पर भी घोंसले में न पहुँचने के कारण

व्याख्या: संध्या होते ही अंधकार बढ़ने लगता है और दिन-भर से भूखे-प्यासे पक्षियों के बच्चे घोंसलों से प्रतीक्षारत झाँकते प्रतीत होते हैं।

51. **(d)** कविता की उड़ान असीमित होती है।

व्याख्या: कवि के भावों की कोई सीमा नहीं है। कविता की कल्पना का दायरा असीमित होता है। कविता घर-घर की कहानी कहती है। वह पंख लगाकर हर जगह उड़ सकती है। कविता की उड़ान व्यापक होती है।

52. **(d)** क्योंकि अत्यधिक स्नेह के कारण उसकी आत्मा कमज़ोर हो गई है।

व्याख्या: कवि का मन आत्मलानि से भर उठता है क्योंकि उसके अत्यधिक स्नेह के कारण उसकी आत्मा कमजोर हो गई है। उसका अपराधबोध से दबा मन यह प्रेम सहन नहीं कर पा रहा है। इसलिए वह प्रियतमा को भूलने का दंड चाहता है।

53. **(b)** चलते-चलते जूनियरों (अधीनस्थों) से कोई मनोरंजक बात कर

व्याख्या: यशोधर बाबू ऑफिस के काम को पूरा करने के लिए पाँच बजे के बाद भी रुक जाया करते। उन्हें मालूम है कि ऑफिस में उनका व्यवहार शुष्क है। ऑफिस से निकलते वक्त किसी न किसी मनोरंजक बात से माहौल को सहज बनाने का प्रयास करते हैं यह उन्होंने किशनदा से सीखा था।

54. **(d)** महत्त्वाकांक्षी और प्रगतिशील होना

व्याख्या: आज की युवा पीढ़ी के अपने सपने हैं, अपनी आकांक्षाएँ हैं। यशोधर बाबू का मानना था कि वर्तमान समय के अनुकूल रहन-सहन, खाने-पीने का तरीका, उनके जीवन के मूल्य और अपने करियर के प्रति सचेत रहना आदि समय की माँग है। यह बात प्राचीन विचारों के धनी यशोधर बाबू के लिए प्रशंसनीय थी। वे अपने समय से आगे नहीं निकल पाए पर उनके बच्चे समय के साथ चल रहे हैं।

55. **(b)** क्योंकि वे परंपरावादी और सिद्धांतवादी थे।

व्याख्या: यशोधर बाबू प्राचीन जीवन-मूल्यों में विश्वास रखते थे, किंतु उनकी पत्नी तथा बच्चे आधुनिक विचारों के थे। इसीलिए उनकी पत्नी तथा बच्चों से विचारों में भिन्नता थी। इस कारण वे दफ्तर से छुट्टी होने के बाद भी जल्दी घर लौटना पसंद नहीं करते थे क्योंकि विचारों की भिन्नता के कारण परिवार के साथ ही छोटी-छोटी बात पर मतभेद होने लगा था।

56. **(d)** पिता से कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद न होने के कारण

व्याख्या: आनंदा के पिता ने उन्हें विद्यालय जाने से रोक दिया तब उन्होंने माँ से दत्ता जी की सहायता लेने को कहा क्योंकि पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में दत्ता जी राव का रवैया सही है। उनका दृष्टिकोण पढ़ाई के प्रति यथार्थवादी था। उन्हें पता था पढ़ने से उसे कोई-न-कोई नौकरी अश्वय मिल जाएगी और गरीबी दूर हो जाएगी।

57. **(b)** पिता की जिम्मेदारियों का भार उठाने के लिए

व्याख्या: आनंदा के पिता को पढ़ाई-लिखाई की जगह खेती-बाड़ी उपयोगी लगती थी। खेती के काम में सहयोग न करने पर लेखक के पिता क्रोधित होते इस कारण न चाहते हुए भी उन्हें पिता की सहायता के लिए निराई-गुड़ाई, भैंस चराने तथा फसलों की रक्षा करने जैसे कार्य करने पड़ते थे।

58. **(d)** वह कविता लेखन-पठन में रुचि लेने लगा।

व्याख्या: मास्टर सौंदलगेकर जी से प्रभावित हो आनंदा गणित में रुचि लेने लगा, कविता में रुचि बढ़ गई, खेतों के काम में रुचि लेने लगा तथा अपने माता-पिता का आदर करने लगा था।

OOO